आस्रव त्रिभङ्गी

आचार्य श्री श्रुतमुनि

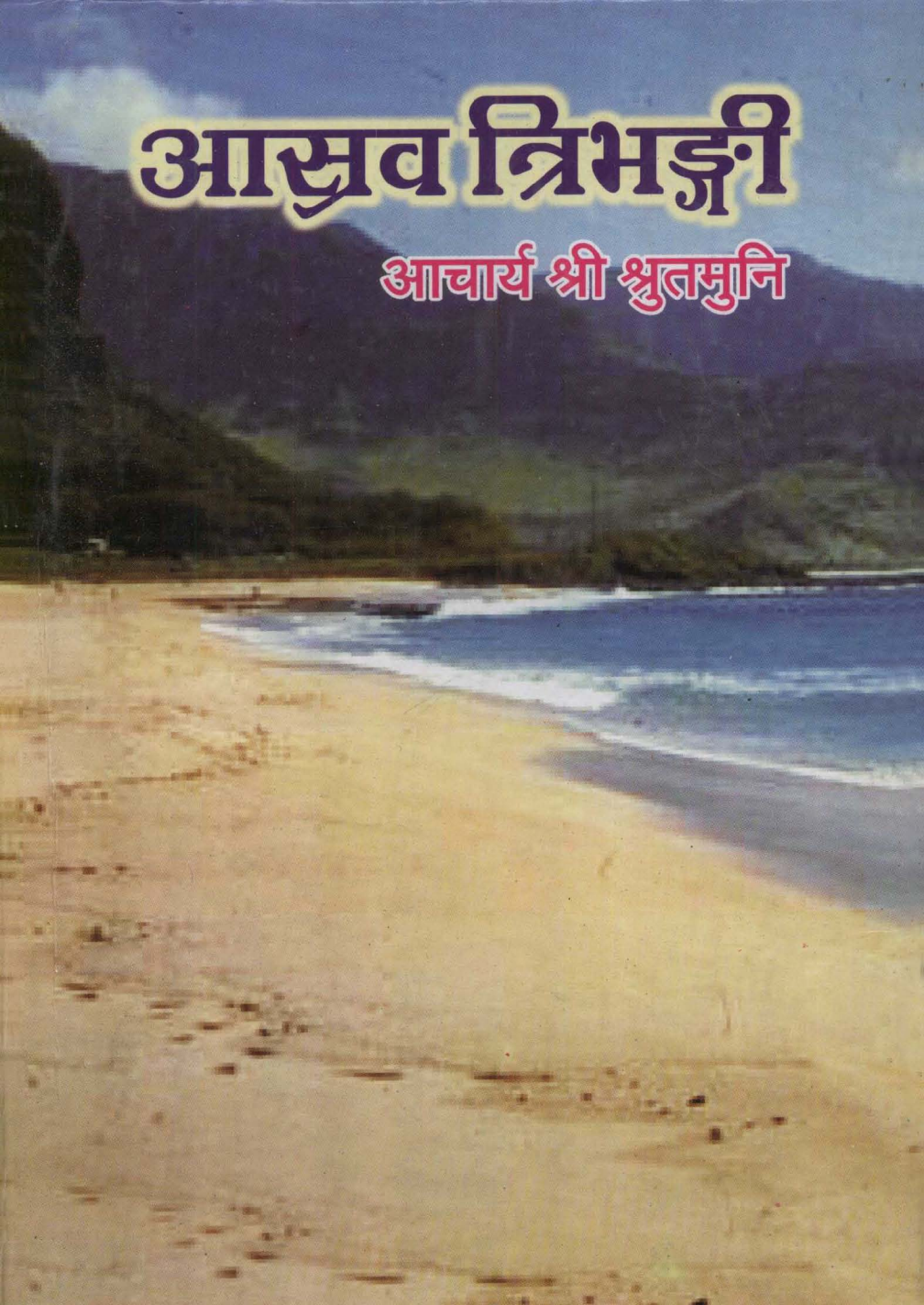

संपादक–अनुवादक
ब्र. विनोद जैन, ब्र. अनिल जैन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य श्री श्रुतमुनि

आस्रव त्रिभङ्गी

अनुवादक-संपादक

ब्र. विनोद जैन "शास्त्री" ब्र. अनिल जैन "शास्त्री"
श्री वर्णी दिगम्बर जैन गुरुकुल
पिसनहारी, जबलपुर

◆

प्रकाशक
गंगवाल धार्मिक ट्रस्ट
नयापारा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृति	–	आस्रव त्रिभङ्गी
प्रणेता	–	आचार्य श्री श्रुतमुनि
अनुवादक–संपादक	–	ब्र. विनोद कुमार जैन ''पपौरा'' ब्र. अनिल कुमार जैन ''जबलपुर''
अक्षर संयोजन	–	राजेश कोष्टा 47, गढ़ा बाजार, जबलपुर
प्रथम संस्करण	–	1000 प्रतियाँ
		वीर निर्माण संवत् 2529
मूल्य	–	स्वाध्याय

प्राप्ति स्थल -

1. ब्र. विनोद कुमार जैन
   श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
   पपौरा जी, जिला – टीकमगढ़ (म.प्र.)

2. श्री सनत जैन
   श्री केसरी लाल कस्तूरचंद गंगवाल
   नयापारा, रायपुर (छ.ग.)

3. ब्र. जिनेश जैन/ब्र. अनिल जैन
   श्री वर्णी दिगम्बर जैन गुरुकुल
   पिसनहारी की मढ़िया, जबलपुर (म.प्र.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय ...

ब्र. विनोद जैन एवं ब्र. अनिल जैन द्वारा अनुवादित कृति ''भाव त्रिभङ्गी'' का प्रकाशन पूर्व में हमारे ट्रस्ट के द्वारा किया गया था। जिससे साधु वर्ग एवं जनसामान्य (श्रावक)वर्ग लाभान्वित हुये। इस वर्ष आप दोनों के द्वारा ''आस्रव त्रिभङ्गी'' का अनुवाद-सम्पादन किया गया। मुझे जब ज्ञात हुआ तो इस ग्रंथ के प्रकाशन का विचार भी ट्रस्ट के माध्यम से कराने का भाव हुआ फलतः इस कृति का प्रकाशन ट्रस्ट ने भगवान महावीर के 2528 वें निर्वाण महोत्सव के शुभावसर पर किया।

आदरणीय ब्रह्मचारीद्वय निरन्तर ज्ञानाभ्यास में रत रहते हैं आप दोनों ने अभी तक प्रकृति परिचय का संकलन-सम्पादन सच्चे सुख का मार्ग का सम्पादन तथा सिद्धान्तसार, ध्यानोपदेश कोश, भाव-त्रिभङ्गी, परमागमसार, लघुनयचक्र, ध्यानसार, श्रुतस्कंध आदि महत्त्वपूर्ण कृतियों को प्रथम बार अनुवाद किया पुण्योदय से ये समस्त कृतियाँ प्रकाश में आ चुकी हैं, ये आप दोनों के परिश्रम का ही फल है। आप लोगों का यह कार्य सचमुच सराहनीय/प्रशंसनीय है। इसी के साथ ही आप दोनों के द्वारा जैनेन्द्रलघुवृत्ति, ध्यानप्रदीप का अनुवाद तथा धवलापारिभाषिक कोश, सत्संख्या सूत्र की व्याख्या, जीवकाण्ड प्रश्नोत्तरी, जैनसिद्धान्त प्रवेशिका एवं चरणानुयोग प्रवेशिका का संकलन किया गया है। आशा है ये कृतियाँ भी शीघ्र ही प्रकाश में आयेंगी। आप दोनों इसी तरह श्रुताराधना में लगे रहें ऐसी मेरी मनोकामना है।

इस ग्रंथ का प्रकाशन मुख्यतः पूज्य पिताजी श्री कस्तूरचंद गंगवाल एवं माताजी गुलाब बाई गंगवाल की स्मृति में उनकी पुत्र वधु श्रीमती उर्मिला देवी गंगवाल कर रही हैं।

आशा है कि पूर्व की कृति की तरह इस कृति को भी साधु वर्ग एवं विद्वत्वर्ग में ससम्मान उपयोग किया जायेगा ऐसी मनोकामना है ...।

-सनत कुमार गंगवाल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य श्रुतमुनि

श्री डॉ. ज्योति प्रसाद जी ने 17 श्रुतमुनियों का निर्देश किया है। पर हमारे अभीष्ट आचार्य श्रुतमुनि परमागमसार, भाव त्रिभङ्गी, आस्रव त्रिभङ्गी आदि ग्रंथों के रचियता हैं। ये श्रुतमुनि मूलसंघ देशीगण पुस्तकगच्छ और कुन्दकुन्द आम्नाय के आचार्य हैं। इनके अणुव्रतगुरु बालेन्द्र या बालचन्द्र थे। महाव्रतगुरु अभयचन्द्र सिद्धान्तदेव एवं शास्त्रगुरु अभयसूरि और प्रभाचन्द्र थे। आस्रव त्रिभङ्गी के अन्त में अपने गुरु बालचन्द्र का जयघोष निम्न प्रकार किया है :-

इदि मग्गणासु जोगो पच्चयभेदो मया समासेण।
कहिदो सुदमुणिणा जो भावइ सो जाइ अप्पसुहं।।

पयकमलजुयलविणमियविणेय जणकयसुपूयमाहप्पो।
णिज्जियमयणपहावो सो बालिंदो चिरं जयऊ।।

आरा जैन सिद्धान्त भवन में भाव त्रिभङ्गी की एक ताड़पत्रीय प्राचीन प्रति है, जिसमें मुद्रित प्रति की अपेक्षा निम्नलिखित सात गाथाएँ अधिक मिलती हैं। इन गाथाओं पर से ग्रंथ रचियता के समय के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है –

अणुवदगुरुबालेंदु महव्वदे अभयचंदसिद्धंति।
सत्थेऽभयसूरि-पहाचंदा खलु सुयमुणिस्स गुरु।।

सिरिमूलसंघदेसिय पुत्थयगच्छ कोंडकुंदमुणिणाहं (?)।
परमण्ण इंगलेसबलम्मिजादमुणिपहद (हाण) स्स।।

सिद्धन्ताहयचंदस्स य सिस्सो बालचंदमुणिपवरो।
सो भवियकुवलयाणं आणंदकरो सया जयऊ।

सद्दागम-परमागम-तक्कागम-णिरवसेसवेदी हु।
विजिदसयलण्णवादी जयउ चिरं अभयसूरिसिद्धंति।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णयणिक्खेवपमाणं जाणित्ता विजिदसयलपरसमओ।
वरणिवइणिवहवंदियपयपम्मो चारुकित्तिमुणी।।

णादणिखिलत्थसत्थो सयलणरिंदेहिं पूजिओ विमलो।
जिणमग्गगमणसूरो जयउ चिरं चारुकित्तिमुणी।।

वरसात्तयणिउणो सुद्धं परओ विरहियपरभाओ।
भवियाणं पडिबोहणयरो पहाचंदणाममुणी।।

इन गाथाओं से स्पष्ट है कि देशीयगण पुस्तकगच्छ इंगलेश्वरबली के आचार्य अभयचन्द्र के शिष्य बालचन्द्रमुनि हुए। इन्होंने अनेक वादियों को पराजित किया था। गाथाओं में आये हुए आचार्यों पर विचार करने से इनके समय का निर्णय किया जा सकता है।

श्रवणवेलगोला के अभिलेखों के अनुसार श्रुतमुनि अभयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती के शिष्य थे। इनके शिष्य प्रभाचन्द्र हुए और उनके प्रिय शिष्य श्रुतकीर्तिदेव हुए। इन श्रुतकीर्तिका स्वर्गवास शक संवत् 1306 (ई. सन् 1384) में हुआ। इनके शिष्य आदिदेव मुनि हुए। पुस्तकगच्छ के श्रावकों ने एक चैत्यालय का जीर्णोद्धार कराकर उसमें उक्त श्रुतकीर्ति की तथा सुमतिनाथ तीर्थंकर की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित की थीं।

बालचन्द्रमुनि ने श्रुतमुनि को श्रावकधर्म की दीक्षा दी थी। आस्रव त्रिभङ्गी और परमागमसार में श्रुतमुनि ने इनका स्मरण किया है।

श्रुतमुनि की तीन रचनाएँ प्राप्त होती हैं:-

1. परमागमसार 2. आस्रव त्रिभङ्गी 3. भाव त्रिभङ्गी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय...

भाव त्रिभङ्गी का कार्य करते समय आस्रव त्रिभङ्गी माणिकचन्द्र ग्रंथमाला से प्रकाशित ''भाव संग्रहादि'' में देखने को प्राप्त हुई थी। जिसका कि सम्पादन और संशोधक कार्य श्री पं. पन्नानाल सोनी ने किया है।

दूसरी प्रति ब्र. अनिल जी, आरा के पाण्डुलिपि भण्डार से विस्तर-त्रिभङ्गी आचार्य कनकनन्दि विरचित लाये थे। जिसमें आस्रव त्रिभङ्गी देखने को प्राप्त हुई थी। दोनों प्रतियों की सहायता से यह कार्य प्रारंभ किया था। आरा से प्राप्त पाण्डुलिपि से कुछ संदृष्टियाँ जो कि भाव संग्राहादि में प्रकाशित आस्रव त्रिभङ्गी में नही है उनको इस ग्रंथ में समाहित किया है। ◆ इस चिन्ह से वे संदृष्टियाँ इसमें प्रकाशित की गई है। **इस ग्रंथ का प्रकाशन अनुवाद सहित प्रथम वार किया जा रहा है।** यह सब कुछ आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी एवं विद्यागुरु पं. पन्नालाल ''साहित्याचार्य जी'' के आशीष का ही सुफल है कि जिससे यह कार्य निर्विघ्नता से सहज ही सम्पन्न हो गया।

ग्रंथ में प्रतिपाद्य :-

- आचार्य श्री श्रुतमुनि ने आस्रवों के सत्तावन भेद बतलाने के पश्चात् क्रमश: गुणस्थान और मार्गणा स्थानों में आस्रवों की व्युच्छित्ति, आस्रव सद्भाव और आस्रव अभाव इन तीनों का विवेचन गाथाओं तथा मूल संदृष्टियों के साथ किया है।

ग्रंथ में विशेषता :-

- कर्मकाण्ड में आस्रव मात्र का उल्लेख गुणस्थानों में प्राप्त होता है किन्तु कार्मण स्थानों में संदृष्टियुक्त विस्तृत विवेचन तथा आस्रव व्युच्छित्ति आस्रव और आस्रव अभाव, रूप विवेचन अन्यत्र ग्रंथों में उपलब्ध नहीं होता है।

ग्रंथ में विचारणीय बिन्दु :-

- गाथा संख्या 43 में पुंवेद में स्त्रीवेद और नपुंसकवेद को छोड़कर शेष सभी पचपन आस्रव होते हैं। स्त्रीवेद में आहारकद्विक, पुंवेद और नपुंसकवेद को छोड़कर शेष सभी तिरेपन आस्रव होते हैं तथा नपुंसकवेद में स्त्रीवेद, पुंवेद आहारकद्विक को छोड़कर शेष तिरेपन आस्रव होते हैं। यहाँ यह विचारणीय है कि पुंवेद में स्त्रीवेद और नपुंसकवेद के आस्रव का अभाव क्यों बतलाया है? जबकि कर्मकाण्ड में पुंवेद में सत्तावन आस्रवों का कथन उपलब्ध होता है

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा स्त्रीवेद और नपुंसकवेद में आहारद्विक को छोड़कर शेष पचपन आस्रव कहे गये हैं।

❋ जो संदृष्टियाँ ग्रंथ में उपलब्ध हैं उनके पहले आस्रव व्युच्छित्ति, पश्चात् आस्रव सद्भाव और अंत में आस्रव अभाव का क्रम दिया गया है जबकि ग्रंथ में पहले आस्रव व्युच्छित्ति का कथन करने के पश्चात् अनास्रव और अंत में आस्रवों का कथन दिया है। आरा से प्राप्त पाण्डुलिपी में गाथा संख्या 11 के पश्चात् 15 दी गई है पश्चात् 12, 13 आदि दी गई। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि जो गाथाओं का क्रम वर्तमान में इस ग्रंथ में उपलब्ध है वह नहीं रहा हो जैसा संदृष्टियों में विषय रखा गया वही गाथाओं में भी रहा हो।

❋ विस्तर त्रिभङ्गी की पाण्डुलिपि में आस्रव त्रिभङ्गी का कथन गुणस्थानों में करने के पश्चात् एक गाथा और उपलब्ध है जिसका प्रयोजन स्पष्ट नहीं हो सका वह गाथा निम्न प्रकार है -

मिच्छक्कसाओवेदोरदिभयदुगबंधदिगिवीसं।
सत्तर सत्तर तेरं तिणतं पंचादिएगंता ।।

❋ गाथा संख्या 15 का द्वितीय पाठ निम्न प्रकार से प्राप्त है -

मिच्छे पण मिच्छत्तं साणे अणचारि मिस्सये सुण्णं।
अयदे बिदिय कसाया तसवह वेगुव्वजुगल दसएक्कं ।।

यहाँ ''दसएक्कं'' पाठ विचारणीय है।

इस ग्रंथ का कार्य जबलपुर गुरुकुल में रहकर ही सम्पन्न हुआ, गुरुकुल के पुस्तकालय का पूर्णत: उपयोग किया गया। ब्र. जिनेश जी अधिष्ठाता श्री वर्णी दिग. जैन गुरुकुल का हम लोग हृदय से आभार व्यक्त करते है। कार्य के लिए समस्त उपयोगी सामग्री यथा समय उपलब्ध होती रही है। ब्र. राजेन्द्र जैन, पठा के सुझाव भी हमें समय समय पर प्राप्त होते रहे है उनके प्रति भी हम कृतज्ञ है। साथ ही ब्र. त्रिलोक जी को हम लोग नहीं भुला सकते है जो कि समय समय पर मन:प्रसन्नता के निमित्त रहे है।

आशा है यह कृति विद्वत्वर्ग के साथ जनोपयोगी भी सिद्ध होगी। प्रूफ सम्बन्धी व अर्थ सम्बन्धी कुछ त्रुटियाँ होना संभव है। अत: श्रुतविज्ञ उन त्रुटियों की ओर हमें इंगित करें।

वीर निर्वाण संवत् 2529

- ब्र. विनोद जैन
- ब्र. अनिल जैन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषय	गाथा सं.	पृष्ठ सं.
1.	मंगलाचरण एवं प्रतिज्ञा वचन	1	1
2.	आस्रवों के उत्तर भेद	2-8	1-3
3.	गुणस्थानों में मूल आस्रव	9	4
4.	गुणस्थानों में काययोग	10	4
5.	गुणस्थानों में आस्रव व्युच्छित्ति, आस्रव सद्भाव एवं आस्रव अभाव	11-21	5-10
6.	गुणस्थानों में आस्रव त्रिभङ्गी एवं सृदृष्टि (1 अ)		11-16
7.	गुणस्थानों में योग एवं संदृष्टि (1 ब)	22	17-18
8.	गुणस्थानों में कषाय एवं संदृष्टि (1 स)	23	18-19
9.	मध्य मंगलाचरण एवं मार्गणाओं में आस्रव कथन की प्रतिज्ञा	24	19
10.	पर्याप्त अपर्याप्त जीवों में योग	25	20
11.	गति मार्गणा में आस्रव त्रिभङ्गी एवं संदृष्टियाँ (2-12)	26-34	20-34
12.	इन्द्रिय एवं काय मार्गणा में आस्रव त्रिभङ्गी एवं संदृष्टियाँ (13-20)	35-38	35-41
13.	योग, वेद, कषाय एवं ज्ञान मार्गणा में आस्रव त्रिभङ्गी एवं संदृष्टियाँ (21-36)	39-49	42-61
14.	संयम, दर्शन, लेश्या, भव्य, सम्यक्त्व, संज्ञी एवं आहार मार्गणा में आस्रव त्रिभङ्गी एवं संदृष्टियाँ (37-61)	50-60	61-87
15.	ग्रंथ अध्ययन का फल एवं अन्तिम मङ्गलाचरण	61-62	87-88

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री-श्रुतमुनि-विरचिता

आस्रव - त्रिभङ्गी

संदृष्टि-सहिता

पणमिय सुरेंदपूजियपयकमलं वड्ढमाणममलगुणं।
पच्चयसत्तावण्णं वोच्छे हं सुणह भवियजणा ॥1॥

प्रणम्य सुरेन्द्रपूजितपदकमलं वर्धमानं अमलगुणं।
प्रत्ययसप्तपंचाशत् वक्ष्येऽहं शृणुत भव्यजनाः !॥

अर्थ - निर्मलगुणों के धारक तथा इन्द्रों के द्वारा पूजित हैं पद कमल जिनके ऐसे वर्द्धमान स्वामी को नमस्कार कर, सत्तावन आस्रवों को कहूँगा। उन्हें भव्यजन सुनों।

मिच्छत्तं अविरमणं कसाय जोगा य आसवा होंति।
पण बारस पणवीसा पण्णरसा होंति तब्भेया ॥2॥

मिथ्यात्वमविरमणं कषाया योगश्च आस्रवा भवन्ति।
पंच द्वादश पंचविंशतिः पंचदश भवन्ति तद्भेदाः॥

अर्थ - मिथ्यात्व के पाँच, अविरति के बारह, कषाय के पच्चीस और योग के पन्द्रह इस प्रकार आस्रव के सत्तावन भेद होते हैं।

मिच्छोदयेण मिच्छत्तमसद्दहणं तु तच्चअत्थाणं।
एयंतं विवरीयं विणयं संसयिदमण्णाणं ॥3॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिथ्यात्वोदयेन मिथ्यात्वमश्रद्धानं तु तत्वार्थानां।
एकान्तं विपरीतं विनयं संशयितमज्ञानम्॥

अर्थ - मिथ्यात्व कर्म के उदय से मिथ्यादृष्टि जीव पदार्थों का विपरीत श्रद्धान करता है। वह मिथ्यात्व एकांत, विपरीत, वैनयिक, संशय और अज्ञान के भेद से पाँच प्रकार का होता है।

छस्सिंदिएसुऽविरदी छज्जीवे तह य अविरदी चेव।
इंदियपाणासंजम दुदसं होदित्ति णिद्दिट्ठं॥4॥

षट्स्विन्द्रियेष्वविरतिः षड्जीवेषु तथा चाविरतिश्चैव।
इन्द्रियप्राणासंयमा द्वादश भवन्तीति निर्दिष्टं॥

अर्थ - पाँच इन्द्रियों के विषय, छठवाँ मन - इस प्रकार इन्द्रिय असंयम के छह भेद, पंच स्थावर तथा त्रस जीवों की हिंसा इस प्रकार प्राणी असंयम के छह भेद, इस प्रकार दो प्रकार की अविरति बारह भेद रूप होती है यह जिनेन्द्र देव के द्वारा कहा है।

अणमप्पच्चक्खाणं पच्चक्खाणं तहेव संजलणं।
कोहो माणो माया लोहो सोलस कसायेदे॥5॥

अनमप्रत्याख्यानः[1] प्रत्याख्यानः तथैव संज्वलनः।
क्रोधो मानो माया लोभः षोड़श कषाया एते॥

अर्थ - अनन्तानुबंधी - क्रोध, मान, माया, लोभ, अप्रत्याख्यान - **क्रोध, मान**, माया, लोभ, प्रत्याख्यान - क्रोध, मान, माया, लोभ तथा **संज्वलन** - क्रोध, मान, माया, लोभ इस प्रकार कषाय के ये सोलह भेद हैं।

---

1 अनन्तानुबन्धि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हस्स रदि अरदि सोयं भयं जुगंछा य इत्थिपुंवेयं।
संढ़ं वेयं च तहा णव एदे णोकसाया य॥6॥

हास्यं रतिः अरतिः शोकः भयं जुगुप्सा च स्त्री-पुंवेदौ।
षंढ़ो वेदः च तथा नवैते नोकषायाश्च॥

अर्थ - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद और नपुंसकवेद ये नौ नोकषाय जानना चाहिए।

मणवयणाण पउत्ती संद्यासद्युभयअणुभयत्थेसु।
तण्णामं होदि तदा तेहिं दु जोगा हु तज्जोगा॥7॥

मनोवचनानां प्रवृत्तिः सत्यासत्योभयानुभयार्थेषु।
तन्नाम भवति तदा तैस्तु योगाद्धि तद्योगाः॥

अर्थ - मन और वचन की सत्य, असत्य, उभय और अनुभय रूप पदार्थों में प्रवृत्ति - उनके नामानुसार सत्य मनोयोग, असत्य मनोयोग उभय मनोयोग और अनुभय मनोयोग तथा सत्य, असत्य, उभय और अनुभय रूप वचनयोग कहलाती है।

ओरालं तंमिस्सं वेगुव्वं तस्स मिस्सयं होदि।
आहारय तंमिस्सं कम्मइयं कायजोगेदे॥8॥

औदारिकं तन्मिश्रं वैक्रियिकं तस्य मिश्रकं।
आहारकं तन्मिश्रं कार्मणकं काययोगा एते॥

अर्थ - औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र तथा कार्मण काययोग इस प्रकार सात प्रकार का काययोग होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छे खलु मिच्छत्तं अविरमणं देससंजदो [1]त्ति हवे।
सुहुमो त्ति कसाया पुणु सजोगिपेरंत जोगा हु[2] ॥9॥

मिथ्यात्वे खलु मिथ्यात्वं अविरमणं देशसंयतमिति भवेत्।
सूक्ष्ममिति कषायाः पुनः सयोगिपर्यन्तं योगा हि॥

अर्थ - निश्चय से मिथ्यात्व गुणस्थान में मिथ्यात्व, देशसंयम अर्थात् पंचम गुणस्थान तक अविरति, सूक्ष्मसांपराय अर्थात् दशमें गुणस्थान तक कषाय तथा सयोग केवली गुणस्थान तक योग रूप आस्रव पाया जाता है।

मिच्छदुगविरदठाणे मिस्सदुकम्मइयकायजोगा य।
छट्ठे हारदु केवलिणाहे ओरालमिस्सकम्मइया ॥10॥

मिथ्यात्वद्धिकाविरतस्थाने मिश्रद्धिककार्मणकाययोगाश्च।
षष्ठे आहारद्धिकं केवलिनाथे औदारिकमिश्रकार्मणाः॥

अर्थ - मिथ्यात्व, सासादन और अविरत नामक चतुर्थ गुणस्थान में औदारिक काययोग, औदारिक मिश्र काययोग, वैक्रियिक काययोग, वैक्रियिक मिश्र काययोग, छठवें गुणस्थान में आहारक काययोग और आहारक मिश्र काययोग तथा (सयोग) केवली भगवान के औदारिक मिश्र और कार्मण काययोग पाया जाता है।

---

1. इति यावदर्थे।
2. चदुपच्चइगो मिच्छे बंधो पढमे णंतरतिगे तिपच्चइगो।
मिस्सगविदियं उवरिमदुगं च देसेक्कदेसम्मि ॥1॥
उवरिल्लपंचये पुण दुपच्चया जोगपच्चओ तिण्हं।
सामण्णपच्चया खलु अट्ठण्हं होंति कम्माणं ॥2॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंच[1] चदु सुण्ण सत्त य पण्णर दुग सुण्ण छक्क छक्केक्कं।
सुण्णं चदु सगसंखा पच्चयविच्छित्ति णायव्वा ॥11॥

पंच चतुः शून्यं सप्त च पंचदश द्वौ शून्यं षट्कं षट्कैकं[2] एकं।
शून्यं चतुः सप्तसंख्या प्रत्ययविच्छित्तिः ज्ञातव्या ॥

अर्थ - प्रथम गुणस्थान से लेकर सयोग केवली गुणस्थान तक क्रमशः पाँच, चार, शून्य, सात, पन्द्रह, दो, शून्य, छह, छह बार एक-एक, एक, शून्य, चार और सात की आस्रव व्युच्छित्ति जानना चाहिए।

विशेष - इस गाथा में आया हुआ छह बार एक-एक से नवमें गुणस्थान के छह भागों में एक-एक की व्युच्छित्ति जानना चाहिए।

मिच्छे हारदु सासणसम्मे मिच्छत्तपंचकं णत्थि।
अण दो मिस्सं कम्मं मिस्से ण चउत्थए सुणह ॥12॥

मिथ्यात्वे आहारकद्विकं सासादनसम्यक्त्वे मिथ्यात्वपंचकं नास्ति।
अनः[3] द्वे मिश्रे [4]कर्म मिश्रे न चतुर्थे शृणुत ॥

अर्थ - मिथ्यात्व गुणस्थान में आहारक काययोग और आहारक मिश्र काययोग, सासादन गुणस्थान में पंच मिथ्यात्व, मिश्र गुणस्थान में अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, कार्मणकाययोग रूप आस्रवों का अभाव है तथा चतुर्थ गुणस्थान में किसी भी आस्रव का अभाव नहीं होता है। आगे के गुणस्थान संबंधी आस्रव अभावों को सुनों।

---

1. अत्र केशववर्णिनोक्तगाथा-
   पण चदु सुण्णं णवयं पण्णरस दोण्णि सुण्ण छक्कं च।
   एक्केकं दस जाव य एक्कं सुण्णं च चारि सग सुण्णं ॥1॥
2. अनिवृत्तिकरण गुणस्थानस्य षड्भागास्तत्र
   एकैकस्मिन् भागे एकैक आस्रवो व्युच्छित्ति क्रमेण।
3. अनन्तानुबंधिचतुष्कं 4 औदारिकवैक्रियिकाख्ये मिश्रे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष - उपर्युक्त गाथा में गुणस्थान सम्बन्धी आस्रवों का अभाव मात्र निरूपित है अन्य व्यवस्था यहाँ नहीं कही गई है। जैसे - सासादन गुणस्थान में आहारक काययोग और आहारकमिश्र काययोग का भी अभाव पाया जाता है, किन्तु इन दोनों का इस गुणस्थान में कथन नहीं किया गया है। मात्र सासादन गुणस्थान सम्बन्धी पाँच मिथ्यात्वों के अभाव का उल्लेख किया गया है। इसी प्रकार आगे के गुणस्थान सम्बन्धी व्यवस्था जानना चाहिए।

दो मिस्स कम्म खित्तय तसवह वेगुव्व तस्स मिस्सं च।
ओरालमिस्स कम्ममपच्चक्खाणं तु ण हि पंचे॥13॥

द्वे मिश्रे कर्म क्षिप, त्रसवधो वैक्रियिकं तस्य मिश्रं च।
औदारिकमिश्रं कर्माप्रत्याख्यानं तु न हि पंचमे॥

अर्थ - पंचम गुणस्थान में औदारिक मिश्र काययोग, आहारक मिश्र काययोग, त्रसवध, वैक्रियिक काययोग, वैक्रियिक मिश्र काययोग, औदारिक मिश्र काययोग तथा अप्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया और लोभ इन आस्रवों का अभाव है।

इत्तो उवरिं सगसगविच्छित्तिअणासवाण संजोगे।
उवरूवरिं गुणठाणे होंतित्ति अणासवा णेया॥14॥

इतः उपरि स्वस्वविच्छित्त्यास्रवाणां संयोगे।
उपर्युपरि गुणस्थाने भवन्तीति अनास्रवा ज्ञेयाः॥

अर्थ - पंचम गुणस्थान से आगे के गुणस्थानों में अपने-अपने गुणस्थान में होने वाली व्युच्छित्ति रूप आस्रवों का सद्भाव तथा इसके ऊपर के गुणस्थानों में उन आस्रवों का अभाव होता है अर्थात् जिन आस्रवों की पूर्व के गुणस्थानों में व्युच्छित्ति होती है उनका ही आगे के गुणस्थानों में अभाव होता है। ऐसा जानना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेष - जैसे छट्वे गुणस्थान में आहारकद्विक की व्युच्छित्ति होती है इन दोनों का छट्वे गुणस्थान में सद्भाव तथा सातवें गुणस्थान में अभाव पाया जाता है।

मिच्छे[1] पणमिच्छत्तं साणे अणचारि मिस्सगे सुण्णं।
अयदे विदियकसाया तसवह वेगुव्वजुगलछिदी ॥15॥

मिथ्यात्वे पंचमिथ्यात्वं, साने अनचतुष्कं मिश्रके, शून्यं।
अयते द्वितीयकषाया: त्रसवधवैक्रियिकयुगलच्छित्ति: ॥

अर्थ - मिथ्यात्व गुणस्थान में पाँच मिथ्यात्व, सासादन गुणस्थान में अनन्तानुबंधी चतुष्क, मिश्र गुणस्थान में शून्य, चतुर्थ गुण स्थान में अप्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया और लोभ, त्रसवध, वैक्रियिक काययोग और वैक्रियिक मिश्र काययोग की आस्रव व्युच्छित्ति हो जाती है।

अविरयएक्कारह तियचउक्कसाया पमत्तए णत्थि।
अत्थि हु आहारदुगं हारदुगं णत्थि सत्तट्ठे ॥16॥

अविरत्यैकादश तृतीयचतुष्कषाया: प्रमत्तके न संति।
अस्ति हि आहारद्विकं, आहारद्विकं नास्ति सप्तमे, अष्टमे ॥

---

1. अत्र सुखावबोधार्थं केशववर्णिनोक्तं गाथापंचकमुद्धियते-
मिच्छे पणमिच्छतं, पढ़मकसायं तु सासणे, मिस्से।
सुण्णं, अविरदसम्मे विदियकसायं विगुव्वदुगकम्मं ॥1॥
ओरालमिस्स तसवह णवयं, देसम्मि अविरदेक्कारा।
तदियकसायं पण्णर, पमत्तविरदम्मि हारदुग छेदो ॥2॥
सुण्णं पमादरहिदे, पुव्वे छण्णोकसायवोच्छेदो, ।
अणियट्टिम्मि य कमसो एक्केकं वेदतियकसायतियं, ॥3॥
सुहमे सुहमो लोहो, सुण्णं उवसंतगेसु, खीणेसु।
अलीयुभयवयणमणचउ, जोगिम्मि य सुणह वोच्छामि ॥4॥
सच्चणुभायं वयणं मणं च ओरालकायजोगं च।
ओरालमिस्सकम्मं उवयारेणेव सब्भावो, ॥5॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ - प्रमत्त गुणस्थान में ग्यारह अविरति और प्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया और लोभ कषाय ये पन्द्रह आस्रव नहीं हैं। आहारक काययोग, आहारक मिश्रकाययोग का आस्रव होता है। आहारक काययोग, आहारक मिश्र काययोग का सप्तम और अष्टम गुणस्थान में आस्रव नहीं है।

छण्णोकसाय णवमे ण हि दसमे संढमहिलपुंवेयं।
कोहो माणो माया ण हि लोहो णत्थि उवसमे खीणे ॥17॥

षण्णोकषायाः, नवमे 'नहि'[1] दशमे षंढ़महिलपुंवेदाः।
क्रोधो मानो माया 'नहि'[2] लोभो, नास्ति [3]उपशमे, क्षीणे॥

अर्थ - नवमें गुणस्थान में छह नोकषाय, दशवें गुणस्थान में नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, पुंवेद, संज्वलन क्रोध, मान, माया एवं उपशांत मोह और क्षीण मोह गुणस्थान संज्वलन लोभ में नहीं पाया जाता है।

अलियमणवयणमुभयं णत्थि जिणे अत्थि सच्चमणुभयं।
मिस्सोरालियकम्मं अपच्चयाऽजोगिणो होंति ॥18॥

अलीकमनोवचनं उभयं नास्ति[4], जिने अस्ति सत्यमनुभयं।
मिश्रौदारिककार्मणा, अप्रत्यया अयोगिनो भवन्ति॥

अर्थ - जिनेन्द्र भगवान (सयोगकेवली) के असत्य मनोयोग, उभय मनोयोग, असत्य वचनयोग और उभय वचनयोग नहीं है तथा सत्य, अनुभय मनोयोग- वचनयोग, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग का सद्भाव है एवं अयोग केवली के समस्त आस्रव अभाव रूप हैं।

1-2. व्युच्छिते इत्यर्थः। 3 शून्यमित्यर्थः। 4 व्युच्छिद्यते इत्यर्थः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चयसत्तावण्णा गणहरदेवेहिं अक्खिया सम्मं।
ते चउबंधणिमित्ता बंधादो पंचसंसारे ॥19॥

प्रत्ययसप्तपंचाशत् गणधरदेवैः कथिताः सम्यक्।
ते चतुबन्धनिमित्ताः बन्धतः पंचसंसारे॥

अर्थ - सत्तावन आस्रव (प्रत्यय) गणधर देव के द्वारा समीचीन प्रकार से कहे गये हैं। ये आस्रव, चारों प्रकार - प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशबंध के कारण हैं तथा कर्मबंध से पंच प्रकार के संसार में परिभ्रमण होता है।

पण[1]वण्णं पण्णासं तिदाल छादाल सत्ततीसा य।
चउवीस दुवावीसं सोलसमेगूण जाव णव सत्ता॥20॥

पंचपंचाशत् पंचाशत् त्रिचत्वारिंशत् षट्चत्वारिंशत् सप्तत्रिंशच्च।
चतुर्विंशतिः द्विद्वाविंशतिः षोडश एकोनं यावन्नव सप्त॥

अर्थ - प्रथम गुण स्थान से सयोग केवली पर्यन्त क्रमशः पचपन, पचास, तेतालीस, छियालीस, सेतीस, चौबीस, बाईस, बाईस, सोलह, पन्द्रह, चौदह, तेरह, बारह, ग्यारह, दश, नौ, नौ तथा सात आस्रव (संख्या) जानना चाहिए।

भावार्थ - मिथ्यात्व में पचपन, सासादन में पचास, मिश्र में तेतालीस, असंयत में छियालीस, देशसंयत में सेतीस, प्रमत्तसंयत में

---

1. अत्रागममोक्तगाथाद्वयं यथा-
पणवण्णा पण्णासा तिदाल छादाल सत्ततीसा य।
चदुवीसा वावीसा बावीसमपुव्वकरणोत्ति ॥1॥
थूले सोलसपहुदी एगूणं जाव होदि दस ठाणं।
सुहुमादिसु दस णवयं णवयं जोगिम्मि सत्तेव ॥2॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौबीस, अप्रमत्तसंयत में बाईस, अपूर्वकरण में बाईस, अनिवृत्तिकरण भाग-1 में सोलह, भाग-2 में पन्द्रह, भाग-3 में चौदह, भाग-4 में तेरह, भाग-5 में बारह, भाग-6 में ग्यारह, सूक्ष्मसाम्पराय में दस, उपशान्तमोह में नौ, क्षीणमोह में नौ तथा सयोगकेवली गुणस्थान में सात आस्रव होते हैं।

दुग[1] सग चदुरिगिदसयं वीसं तियपणदुसहियतीसं च।
इगिसगअडअड़दालं पण्णासा होंति संगवण्णा ॥21॥

द्वौ सप्त चतुरेकदशकं विंशतिः त्रिकपंच-द्विसहिततत्रिंशच्च।
एकसप्ताष्टाष्टचत्वारिंशत् पंचाशत् भवन्ति सप्तपंचाशत्॥

अर्थ - प्रथम गुणस्थान से लेकर अयोग केवली पर्यन्त क्रमशः दो, सात, चौदह, ग्यारह, बीस, तेतीस, पेंतीस, पेंतीस, इक्तालीस, ब्यालीस, तेंतालीस, चवालीस, पेतालीस, छयालीस, सेतालीस, अड़तालीस, अड़तालीस, पचास और सत्तावन आस्रव (प्रत्यय) अभाव रूप जानना चाहिए।

भावार्थ - मिथ्यात्व गुणस्थान में दो, सासादन में सात, मिश्र में चौदह, अविरत में ग्यारह, देशविरत में बीस, प्रमत्तविरत में तेतीस, अप्रमत्तविरत में पेंतीस, अपूर्वकरण में पेंतीस, अनिवृत्तिकरण भाग-1 में इक्तालीस, भाग-2 में ब्यालीस, भाग-3 में तेतालीस, भाग-4 में चवालीस, भाग-5 में पेंतालीस, भाग-6 में छयालीस, सूक्ष्मसाम्पराय में सेंतालीस, उपशान्तमोह में अड़तालीस, क्षीणमोह में अड़तालीस, सयोगकेवली में पचास और अयोगकेवली गुणस्थान में सत्तावन आस्रवों का अभाव होता है।

---

1. अत्र केशववर्णिनोक्तगाथा-
दोण्णि य सत्त य चोद्दसणुदसे वि एयार वीस तेत्तीसं।
पणतीस दुसिगिदालं सत्तेतालट्ठदाल दुसु पण्णं ॥1॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 1 (अ)

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व- (एकान्त, विपरीत, विनय, संशय और अज्ञान)]	55 [5 मिथ्यात्व (एकान्त, विपरीत, विनय, संशय और अज्ञान), 12 अविरति (षट्काय- पृथ्विकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय, पाँच इन्द्रियाँ - स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र तथा मन), 13 योग (मनोयोग, 4 - सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 - सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 5 - औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मण) कषाय 25 (कषाय 16 - अनन्तानुबन्धी - क्रोध, मान, माया, लोभ, अप्रत्याख्यान - क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रत्याख्यान - क्रोध, मान, माया, लोभ, संज्वलन - क्रोध, मान, माया, लोभ, नोकषाय - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद)]	2 [आहारक और आहारक मिश्र काययोग]
2. सासादन	4 [अनन्तानुबन्धी - क्रोध, मान, माया, लोभ]	50 [12 अविरति, मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - (औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मण) कषाय 25]	7 [मिथ्यात्व 5 - (एकान्त, विपरीत, विनय, संशय और अज्ञान), आहारक और आहारक मिश्र काययोग]
3. मिश्र	0	43 [अविरति - 12 (षट्काय - पृथ्विकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय, पाँच इन्द्रियाँ - स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र तथा मन)	14 [मिथ्यात्व 5- (एकान्त, विपरीत, विनय, संशय और अज्ञान), आहारक आहारकमिश्र, औदारिक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
		10 योग (मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 2 – औदारिक, वैक्रियिक), कषाय 21 (कषाय 12 अप्रत्याख्यान – क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रत्याख्यान – क्रोध, मान, माया, लोभ, संज्वलन – क्रोध, मान, माया, लोभ, 9 नोकषाय – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद)]	मिश्र, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मण काययोग) 4 अनन्तानुबन्धी – क्रोध, मान, माया, लोभ]
4. अविरत	7 [अप्रत्याख्यान – क्रोध, मान, माया, लोभ, वैक्रियिक काययोग, वैक्रियिकमिश्र काययोग, त्रस अविरति]	46 [अविरति – 12 (षट्काय – पृथ्विकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय, पाँच इन्द्रियाँ – स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र तथा मन) 13 योग (मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 5 – औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र और कार्मण) कषाय 21 (कषाय 12 अप्रत्याख्यान – क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रत्याख्यान – क्रोध, मान, माया, लोभ, संज्वलन – क्रोध, मान, माया, लोभ, 9 नोकषाय – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद)]	11 [मिथ्यात्व 5– (एकान्त, विपरीत, विनय, संशय और अज्ञान), आहारक और आहारकमिश्र काययोग, 4 अनन्तानुबन्धी – क्रोध, मान, माया, लोभ]
5. देशविरत	15 [अविरति – 11 पंचस्थावरकाय – पृथ्विकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, पाँच	37 [अविरति – 11 (पंचस्थावर – पृथ्विकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और पाँच इन्द्रियाँ – स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र तथा मन), 9 योग	20 [मिथ्यात्व 5 – (एकान्त, विपरीत, विनय, संशय और अज्ञान), आहारक और आहारकमिश्र, औदारिक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
	इन्द्रियाँ – स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र तथा मन, प्रत्याख्यान – क्रोध, मान, माया, लोभ]	(मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 – औदारिक), कषाय 17 (कषाय 8 प्रत्याख्यान – क्रोध, मान, माया, लोभ, संज्वलन – क्रोध, मान, माया, लोभ, 9 नोकषाय – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद)]	मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र, और कार्मणकाययोग), 4 अनन्तानुबन्धी, 4 अप्रत्याख्यान, त्रस अविरति]
6. प्रमत्त संयम	2 [आहारक काययोग, आहारक मिश्र काययोग]	24 [11 योग (मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 3 – आहारक, आहारकमिश्र, औदारिक), कषाय 13 (कषाय 4 संज्वलन – क्रोध, मान, माया, लोभ, 9 नोकषाय – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद)]	33 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मण काययोग) 4 अनन्तानुबन्धी 4 अप्रत्याख्यान, 4 प्रत्याख्यान]
7. अप्रमत्त संयम	0	22 [9 योग (मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 – औदारिक), कषाय 13 (कषाय 4 संज्वलन – क्रोध, मान, माया, लोभ, 9 नोकषाय – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद)]	35 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कार्मण काययोग) 4 अनन्तानुबन्धी, 4 अप्रत्याख्यान, 4 प्रत्याख्यान]
8. अपूर्व-करण	6 [हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा]	22 [9 योग (मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 – औदारिक), कषाय 13 (कषाय 4 संज्वलन – क्रोध, मान,	35 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कार्मण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
		माया, लोभ, 9 नोकषाय – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद)]	काययोग) 4 अनन्तानुबन्धी, 4 अप्रत्याख्यान, 4 प्रत्याख्यान]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 1	1 [नपुंसकवेद]	16 [9 योग (मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 – औदारिक), कषाय 7 – 4 संज्वलन – क्रोध, मान, माया, लोभ, 3 नोकषाय – स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद]	41 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कार्मण काययोग) 4 अनन्तानुबन्धी, 4 अप्रत्याख्यान, 4 प्रत्याख्यान, हास्य आदि 6 नोकषाय]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 2	1 [स्त्रीवेद]	16 [9 योग (मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 – औदारिक), कषाय 6 – 4 संज्वलन – क्रोध, मान, माया, लोभ, 2 नोकषाय – स्त्रीवेद, पुंवेद]	42 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कार्मण काययोग, 4 अनन्तानुबन्धी, 4 अप्रत्याख्यान, 4 प्रत्याख्यान, हास्य आदि 6 नोकषाय, नपुंसकवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 3	1 [पुंवेद]	14 [9 योग (मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 – औदारिक), कषाय 5 – 4 संज्वलन – क्रोध, मान, माया, लोभ, 1 नोकषाय – पुंवेद]	43 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिकद्विक, आहारकद्विक और कार्मण काययोग, 4 अनन्तानुबन्धी, 4 अप्रत्याख्यान, 4 प्रत्याख्यान, हास्य आदि 6 नोकषाय, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
9. अनिवृत्ति-करण भाग 4	1 [संज्वलन - क्रोध]	13 [9 योग (मनोयोग 4 - सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 - सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 - औदारिक), [redacted] कषाय 4 - संज्वलन - क्रोध, मान, माया, लोभ)]	44 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिकद्विक, आहारकद्विक, और कार्मण काययोग, 4 अनन्तानुबन्धी, 4 अप्रत्याख्यान, 4 प्रत्याख्यान, 6 नोकषाय, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, पुंवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 5	1 [संज्वलन - मान]	12 [9 योग (मनोयोग 4 - सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 - सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 - औदारिक), [redacted] संज्वलन- मान, माया, लोभ]	45 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिकद्विक, आहारकद्विक और कार्मण काययोग 4 अनन्तानुबन्धी, 4 अप्रत्याख्यान, 4 प्रत्याख्यान, संज्वलन - क्रोध 6 नोकषाय, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, पुंवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 6	1 [संज्वलन - माया]	11 [9 योग (मनोयोग 4 - सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 - सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 - औदारिक), [redacted] संज्वलन - माया, लोभ)]	46 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिकद्विक, आहारकद्विक और कार्मण काययोग, 4 अनन्तानुबन्धी, 4 अप्रत्याख्यान, 4 प्रत्याख्यान, संज्वलन - क्रोध, मान, 6 नोकषाय, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, पुंवेद]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
10. सूक्ष्य साम्पराय संयत	1 [संज्वलन – लोभ]	10 [9 योग (मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 – औदारिक), संज्वलन – लोभ]	47 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक द्विक, आहारक द्विक और कार्मण काययोग, 4 अनन्तानुबन्धी, 4 अप्रत्याख्यान, 4 प्रत्याख्यान, संज्वलन – क्रोध, मान, माया, 9 नोकषाय]
11. उपशांत मोह	0	9 [9 योग (मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 – औदारिक)]	48 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिकद्विक, आहारकद्विक और कार्मण काययोग, 16 कषाय 9 नोकषाय]
12. क्षीण मोह	4	9 [9 योग (मनोयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, वचनयोग 4 – सत्य, असत्य, उभय, अनुभय, काययोग 1 – औदारिक)]	48 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, औदारिक मिश्र, वैक्रियिकद्विक, आहारक द्विक और कार्मण काययोग, 16 कषाय, 9 नोकषाय]
13. सयोग केवली	7 [सत्य, अनुभय मनोयोग, सत्य, अनुभय वचनयोग, काययोग 3– औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग]	7 योग 7 [सत्य, अनुभय मनोयोग, सत्य, अनुभय वचनयोग, काययोग 3– औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग]	50 [12 अविरति, 5 मिथ्यात्व, असत्य, उभय मनोयोग, असत्य, उभय वचनयोग, वैक्रियिकद्विक, आहारकद्विक काययोग, 16 कषाय, 9 नोकषाय]
14. अयोग केवली	0	0	57 [अयोग केवली गुणस्थान में सभी 57 आस्रवों का अभाव होता है]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिसु तेरं दस मिस्से सत्तसु णव छट्ठयम्मि एक्कारा।
जोगिम्हि सत्तजोगा अजोगिठाणं हवे सुण्णं ॥22॥

त्रिषु त्रयोदश दश मिश्रे सप्तसु नव षष्ठे एकादश।
योगिनि सप्तयोगा अयोगिस्थानं भवेच्छून्यं ॥

अर्थ - तीन गुणस्थानों में तेरह अर्थात् मिथ्यात्व, सासादन और अविरत गुणस्थान में तेरह, मिश्र में दस, सात गुणस्थानों में नौ अर्थात् देशविरत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय, उपशान्तमोह तथा क्षीणमोह गुणस्थान में नौ का, प्रमत्तविरत में ग्यारह सयोगकेवली में सात एवं अयोगकेवली गुणस्थान में शून्य इस प्रकार उपर्युक्त गुणस्थानों में योग का सद्भाव होता है।

संदृष्टि नं. 1 (ब)

योग - योग 15 होते हैं। जो इस प्रकार हैं - मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 7 - औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कार्मण काययोग।

गुणस्थान	योग
1. मिथ्यात्व	13 [मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 – औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]
2. सासादन	13 [उपर्युक्त]
3. मिश्र	10 [मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 2 – औदारिक और वैक्रियिक काययोग]
4. अविरत	13 [मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 – औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]
5. देशविरत	9 [मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिक काययोग]
6. प्रमत्तविरत	11 [मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 – औदारिक, आहारक और आहारकमिश्र काययोग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	योग
7. अप्रमत्तविरत	9 [मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिक काययोग]
8. अपूर्वकरण	9 [उपर्युक्त]
9. अनिवृत्ति	9 [उपर्युक्त]
10. सूक्ष्मसाम्पराय	9 [उपर्युक्त]
11. उपशांतमोह	9 [उपर्युक्त]
12. क्षीणमोह	9 [उपर्युक्त]
13. सयोगकेवली	7 [सत्य, अनुभय मनोयोग, सत्य, अनुभय वचनयोग, काययोग - 3 औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग]
13. अयोगकेवली	0

दुसु दुसु पणइगिवीसं सत्तरसं देससंजदे तत्तो।
तिसु तेरं णवमे सग सुहमेगं होंति हु कसाया ॥23॥

द्वयो[1] द्वयोः[2] पंचैकविंशतिः सप्तदश देशसंयते ततः।
त्रिषु त्रयोदश नवमे सप्त सूक्ष्मे एकः भवन्ति हि कषायाः॥

अर्थ - दो गुणस्थानों में पच्चीस अर्थात् मिथ्यात्व और सासादन गुणस्थान में पच्चीस कषाय, दो गुणस्थानों में इक्कीस अर्थात् मिश्र और अविरत गुणस्थान में इक्कीस कषाय, देशसंयम में सत्तरह, तीन गुणस्थानों तेरह अर्थात् प्रमत्तविरत, अप्रमत्तविरत और अपूर्वकरण गुणस्थान में तेरह अनिवृत्तिकरण में सात एवं सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में एक लोभ कषाय होती है।

---

1. प्रथमद्वितीयगुणस्थाने पंचविंशतिः।
2. तृतीयचतुर्थगुणस्थाने एकविंशतिः इत्यर्थः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि 1 (स)

कषाय - कषाय 25 होती हैं जो इस प्रकार हैं - अनन्तानुबंधी - क्रोध, मान, माया, लोभ, अप्रत्याख्यान - क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रत्याख्यान - क्रोध, मान, माया, लोभ, संज्वलन - क्रोध, मान, माया, लोभ, नौ नोकषाय - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद और नपुंसकवेद।

	गुणस्थान	कषाय
1.	मिथ्यात्व	25 [16 कषाय, 9 नोकषाय]
2.	सासादन	25 [16 कषाय, 9 नोकषाय]
3.	मिश्र	21 [अप्रत्याख्यानादि 12, 9 नोकषाय]
4.	अविरत	21 [उपर्युक्त]
5.	देशविरत	17 [प्रत्याख्यान 8, 9 नोकषाय]
6.	प्रमत्तविरत	13 [संज्वलन 4, 9 नोकषाय]
7.	अप्रमत्तविरत	13 [उपर्युक्त]
8.	अपूर्वकरण	13 [उपर्युक्त]
9.	अनिवृत्तिकरण	7 [संज्वलन 4 एवं तीन वेद]
10.	सूक्ष्मसाम्पराय	1 [लोभ]

इति गुणस्थान-त्रिभङ्गी समाप्ता।

विजिदचउघाइकम्मे केवलणाणेण णादसयलत्थे।
वीरविणे वंदित्ता जहाकमं मग्गणासवं वोच्छे ॥24॥

विजितचतुर्घातिकर्माणं केवलज्ञानेन ज्ञातसकलार्थं।
वीरजिनं वन्दित्वा यथाक्रमं मार्गणायामास्रवान् वक्ष्ये॥

अर्थ - चार घातियाँ कर्मों का जिन्होंने नाश कर दिया है, केवल ज्ञान के द्वारा जिन्होंने समस्त पदार्थों का जान लिया है, ऐसे वीर जिन को प्रणाम कर, मैं क्रमानुसार मार्गणाओं में आस्रवों का कथन करूंगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिस्सतियकम्मणूणा पुण्णाणं पच्चया जहाजोगा।
मणवयणचउ-सरीरत्तयरहिता पुण्णगे होंति ॥25॥

मिश्रत्रिककार्मणोना: पूर्णानां प्रत्यया यथायोग्य:।
मनोवचनचतु: शरीरत्रयरहिता अपूर्ण-के भवन्ति॥

अर्थ - पर्याप्त जीवों के औदारिक मिश्र, वैक्रियिक मिश्र, आहारक मिश्र और कार्मण काययोग से रहित यथायोग्य आस्रव (प्रत्यय) होते हैं। अपर्याप्तक जीवों के चार मनोयोग, चार वचनयोग, तीन (औदारिक, वैक्रियिक और आहारक) काययोग रूप प्रत्यय नहीं होते है।

इत्थीपुंवेददुगं हारोरालियदुगं च वज्जित्ता।
णेरइयाणं पढ़मे इगिवण्णा पच्चया होंति ॥26॥

स्त्रीपुंवेदद्विकं आहरकौदारिकद्विकं[1] वर्जयित्वा।
नारकाणां प्रथमे[2] एकपंचाशत्प्रत्यया भवन्ति॥

अर्थ - प्रथम नरक में स्त्रीवेद, पुंवेद, औदारिक काययोग, औदारिक मिश्र काययोग, आहारक काययोग और आहारक मिश्र काययोग को छोड़कर इक्यावन आस्रव होते हैं।

विदियगुणे[3] णिरयगदिं ण यादि इदि तस्स णत्थि कम्मइयं।
वेगुव्वियमिस्सं च दु ते होंति हु अविरदे ठाणे ॥27॥

द्वितीयगुणेन नरकगतिं न याति इति तस्य नास्ति कार्मणं।
वैक्रियिकमिश्रं च तु तौ भवतो हि अविरते स्थाने॥

---

1. आहारद्विकं औदारिकद्विकं। 2. गुणस्थाने।
3. 'णहि सासणो अपुण्णे साहारणसुहुमगे य तेउदुगे'। इत्यागमे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ - सासादन गुणस्थानवर्ती जीव, नरक गति में नहीं जाता है इसलिए उसके सासादन गुणस्थान में कार्मण काययोग और वैक्रियिक मिश्र काययोग नहीं होता है। चतुर्थ गुणस्थान में कार्मण काययोग और वैक्रियिक मिश्र काययोग पाया जाता है।

सक्करपहुदिसु एवं अविरदठाणे ण होइ कम्मइयं।
वेगुव्वियमिस्सो वि य तेसिं मिच्छेव वोच्छेदो ॥28॥

शर्कराप्रभृतिषु एवं, अविरतस्थाने न भवति कार्मणं।
वैक्रियिकमिश्रमपि च तयोः मिथ्यात्वे एवं व्युच्छेदः॥

अर्थ - इसी प्रकार द्वितीयादि पृथ्वियों में चतुर्थ गुणस्थान में कार्मण काययोग और वैक्रियिक मिश्र काययोग नहीं होता है। इन दोनों योगों की मिथ्यात्व गुणस्थान में ही व्युच्छित्ति हो जाती है।

संदृष्टि नं. 2

प्रथम नरक आस्रव 51

प्रथम नरक में 51 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - मिथ्यात्व 5, अविरति 12, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र और कार्मण), कषाय 23 (कषाय 16 , नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1 मिथ्यात्व	5 [मिथ्यात्व 5]	51 [मिथ्यात्व 5, अविरति 12, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7-हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)]	0

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
2. सासादन	4 [अनन्तानुबन्धी –क्रोध, मान, माया, लोभ]	44 [अविरति 12, योग 9(मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 1– वैक्रियिक), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7–हास्य आदि 6, नपुंसकवेद)]	7 [मिथ्यात्व 5, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]
3 मिश्र	0	40 [उपर्युक्त 44 – 4 अनन्तानुबन्धी – क्रोध, मान, माया, लोभ]	11 [उपर्युक्त 7+ अनन्तानुबन्धी 4–क्रोध, मान, माया, लोभ]
4. अविरत	8 [अप्रत्याख्यान – क्रोध, मान, माया, लोभ, त्रस अविरति, वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र, और कार्मण काययोग]	42 [अविरति 12, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग), कषाय 19 (अप्रत्याख्यान आदि 12 कषाय नोकषाय 7 –हास्य आदि 6 एवं नपुंसकवेद)]	[9 मिथ्यात्व 5, अनन्तानुबन्धी 4 – क्रोध, मान, माया, लोभ]

संदृष्टि नं. 3

द्वितीयादि 6 नरक आस्रव 51

द्वितीयादि 6 नरकों में 51 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - मिथ्यात्व 5 , अविरति 12, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	7 [मिथ्यात्व 5, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]	51 [मिथ्यात्व 5, अविरति 12, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 – वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण), कषाय 23 (कषाय 16 , नोकषाय 7 – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)]	0

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
2. सासादन	4 [अनन्तानुबन्धी - क्रोध, मान, माया, लोभ]	44 [उपर्युक्त 51 - 7 (मिथ्यात्व 5, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग)]	7 [मिथ्यात्व 5, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग]
3. मिश्र	0	40 [उपर्युक्त 44 अनन्तानुबन्धी 4 - क्रोध, मान, माया, लोभ]	11 [उपर्युक्त 7 + अनन्तानुबन्धी 4]
4. अविरत	6 [अप्रत्याख्यान 4, त्रस अविरति, वैक्रियिककाययोग]	40 [उपर्युक्त]	11 [उपर्युक्त]

वेगुव्वाहारदुगं ण होइ तिरियेसु सेसतेवण्णा।
एवं भोगावणिजे संढ़ विरहिऊण बावण्णा ॥29॥

वैक्रियिकाहारद्धिकं न भवति तिर्यक्षु शेषत्रिपंचाशत्।
एवं भोगावनीजेषु षंढ़ं विरह्य द्धापंचाशत् ॥

अर्थ - कर्मभूमि तिर्यंचों के वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र काययोग, आहारक, आहारक मिश्र काययोग ये आस्रव (प्रत्यय) नहीं होते हैं शेष तिरेपन आस्रव (प्रत्यय) होते हैं। इसी प्रकार भोग भूमिज तिर्यंचों के उपर्युक्त तिरेपन आस्रव में से नपुंसकवेद को छोड़कर शेष बावन आस्रव होते हैं।

लद्धिअपुण्णतिरिक्खे हारदु मणवयण अट्ट ओरालं।
वेगुव्वदुगं पुंवेदित्थीवेदं ण बादालं ॥30॥

लब्ध्यपूर्णतिर्यक्षु आहारकद्धिकं मनवचनाष्टकं औदारिकं।
वैक्रियिकद्धिकं पुंवेदस्त्रीवेदौ न द्धाचत्वारिंशत् ॥

अर्थ - लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यंचों के आहारकद्विक - चार मनोयोग, चार वचनयोग, औदारिक काययोग, वैक्रियिकद्विक, पुंवेद, स्त्रीवेद को छोड़कर ब्यालीस आस्रव होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 4

कर्मभूमिजतिर्यञ्च आस्रव 53

कर्मभूमिजतिर्यञ्च में 53 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - मिथ्यात्व 5, अविरति 12, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - औदारिक, औदारिक मिश्र और कार्मण), कषाय 25 (कषाय 16, नोकषाय 9 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि पाँच होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [मिथ्यात्व 5]	53 [मिथ्यात्व 5, अविरति 12, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3-औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण), कषाय 25 (कषाय 16, नोकषाय 9)]	0
2. सासादन	4 [अनन्तानुबन्धी - क्रोध, मान, माया, लोभ]	48 [अविरति 12, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3- औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण), कषाय 25 (कषाय 16, नोकषाय 9)]	5 [मिथ्यात्व 5]
3. मिश्र	0	42 [उपर्युक्त 48 - 6 (अनन्तानुबन्धी 4, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग)]	11 [मिथ्यात्व 5, अनन्तानुबन्धी 4, औदारिकमिश्र, और कार्मणकाययोग]
4. अविरत	7 [अप्रत्याख्यान 4, त्रस अविरति, औदारिक मिश्र और कार्मण काययोग]	44 [दूसरे गुणस्थान के 48 - अनन्तानुबन्धी 4]	9 [अनन्तानुबन्धी 4, मिथ्यात्व 5]
5. देशविरत	15 [अविरति 11, प्रत्याख्यान 4-क्रोध, मान, माया, लोभ]	37 [उपर्युक्त 44-7 (अप्रत्याख्यान 4, त्रस अविरति, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग)]	16 [उपर्युक्त 9 +7 (अप्रत्याख्यान 4, त्रस अविरति, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग)]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 5

भोगभूमिजतिर्यंच आस्रव 52

भूमिभूमिजतिर्यंचों के 52 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3- औदारिक, औदारिक मिश्र, और कार्मण), कषाय 24 (कषाय 16, नोकषाय 8- हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	52 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण), कषाय 24 (कषाय 16, नोकषाय 8- हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद)]	0
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी, 4 कषाय]	47 [उपर्युक्त 52-5 मिथ्यात्व]	5 [5 मिथ्यात्व]
3. मिश्र	0	41 [उपर्युक्त 47-6 (अनंतानुबंधी 4, औदारिकमिश्र, कार्मणकाययोग)]	11 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग]
4. अविरत	7 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग, त्रसअविरति]	43 [52 - 9 (5 मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी 4)]	9 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 6

लब्ध्यपर्याप्त तिर्यंच आस्रव 42

लब्ध्यपर्याप्त तिर्यंचों के 42 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, मनअविरति को छोड़कर11 अविरति, योग 3 (औदारिक, औदारिकमिश्र, और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व मात्र ही होता है।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	0	42 [5 मिथ्यात्व, 11 अविरति, योग 3 (औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7- हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद]	0

मणुवेसु ण वेगुव्वदु पणवण्णं संति तत्थ भोगेसु।
हारदुसंढ़विवज्जिद दुवण्णऽपुण्णे अपुण्णे वा ॥31॥

मनुजेषु न वैक्रियिकद्विकं पंचपंचाशत् सन्ति तत्र भोगेषु।
आहारद्विकषंढ़विवर्जितं द्विपंचाशत् [1]अपूर्णे अपूर्णे इव ॥

अर्थ - कर्म भूमिज मनुष्यों के वैक्रियिक द्विक को छोड़कर, पचपन आस्रव होते हैं। भोग भूमिज मनुष्यों के उपर्युक्त पचपन में से आहारद्विक, नपुंसकवेद को छोड़कर बावन आस्रव (प्रत्यय) होते हैं तथा लब्ध्यपर्याप्त मनुष्यों में लब्ध्यपर्याप्त तिर्यंचों के समान 42 आस्रव जानना चाहिए।

---

1. लब्ध्यपर्याप्तमनुष्येषु लब्ध्यपर्याप्ततिर्यग्वज्ज्ञातव्यमित्यर्थः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 7

कर्मभूमिजमनुष्य आस्रव 55

कर्मभूमिजमनुष्य के 55 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 13 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 25 (कषाय 16, नोकषाय 9 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चौदह होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	53 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3-औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 25 (कषाय 16, नोकषाय 9 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद]	2 [आहारक, आहारकमिश्र काययोग]
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	48 [12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3-औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण), कषाय 25 (कषाय 16, नोकषाय 9- हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद]	7 [5 मिथ्यात्व, आहारक और आहारकमिश्र काययोग]
3. मिश्र	0	42 [उपर्युक्त 48 - 6 (4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग)]	13 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र और आहारक, आहारकमिश्र, कार्मणकाययोग]
4. अविरत	5 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4,	44 [12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4,	11 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
	त्रस अविरति]	काययोग 3 – औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण), कषाय 21 (अप्रत्याख्यानादि 12 कषाय, नोकषाय 9 – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद)]	आहारक, आहारकमिश्र काययोग]
5. देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	37 [गुणस्थानवत्]	18 [गुणस्थानवत् 20 – वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
6. प्रमत्त विरत	2 [गुणस्थानवत्]	24 [गुणस्थानवत्]	31 [गुणस्थानवत् 33 – वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
7. अप्रमत्त विरत	0	22 [गुणस्थानवत्]	33 [गुणस्थानवत् 35 – वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
8. अपूर्व-करण	6 [गुणस्थानवत्]	22 [गुणस्थानवत्]	33 [गुणस्थानवत् 35 – वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 1	1 [गुणस्थानवत्]	16 [गुणस्थानवत्]	39 [गुणस्थानवत् 41 – वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 2	1 [गुणस्थानवत्]	15 [गुणस्थानवत्]	40 [गुणस्थानवत् 42 – वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 3	1 [गुणस्थानवत्]	14 [गुणस्थानवत्]	41 [गुणस्थानवत् 43 – वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 4	1 [गुणस्थानवत्]	13 [गुणस्थानवत्]	42 [गुणस्थानवत् 44 – वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
9.अनिवृत्ति-करण भाग 5	1 [गुणस्थानवत्]	12 [गुणस्थानवत्]	43 [गुणस्थानवत् 45 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
9.अनिवृत्ति-करण भाग 6	1 [गुणस्थानवत्]	11 [गुणस्थानवत्]	44 [गुणस्थानवत् 46 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
10. सूक्ष्य साम्पराय संयत	1 [गुणस्थानवत्]	10 [गुणस्थानवत्]	45 [गुणस्थानवत् 47 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
11.उपशांत मोह	0	9 [गुणस्थानवत्]	46 [गुणस्थानवत् 48 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
12. क्षीण मोह	4 [गुणस्थानवत्]	9 [गुणस्थानवत्]	46 [गुणस्थानवत् 48 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
13. सयोग केवली	7 [गुणस्थानवत्]	7 [गुणस्थानवत्]	48 [गुणस्थानवत् 50 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]
14. अयोग केवली	0	0	55 [गुणस्थानवत् 57 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र काययोग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 8

भोगभूमिज मनुष्य आस्रव 52

भूमिभूमिज मनुष्य के 52 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - औदारिक, औदारिकमिश्र, और कार्मणकाययोग), कषाय 24 (कषाय 16, नोकषाय 8 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	52 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण), कषाय 24 (कषाय 16, नोकषाय 8 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद)]	0
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	47 [उपर्युक्त 52 - 5 मिथ्यात्व]	5 [5 मिथ्यात्व]
3. मिश्र	0	41 [उपर्युक्त 47-6 (4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग)]	11 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग]
4. अविरत	7 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग, त्रस अविरति]	43 [मिथ्यात्व गुणस्थान के 52-9 (5 मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी 4)]	9 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 9

लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य आस्रव 42

लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य के 42 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, मन को छोड़कर 11 अविरति, योग 3 (औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)। गुणस्थान एक मिथ्यात्व मात्र ही होता है।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	0	42 [5 मिथ्यात्व, 11 अविरति, योग 3 (औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7- हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)]	0

देवे हारोरालियंजुगलं[1] संढं च णत्थि तत्थेव।
देवाणं[2] देवीणं णेवित्थी णेव पुंवेदो ॥32॥

देवेषु आहारकौदारिकयुगले षंढं च नास्ति तत्रैव।
देवानां देवीनां नैव स्त्री नैव पुंवेदः ॥

अर्थ - देवगति में देवों में आहारकद्विक, औदारिकद्विक और नपुंसकवेद नहीं होता है। देवों में स्त्रीवेद तथा देवियों में पुंवेद नहीं होता है।

भवणतिकप्पित्थीणं असंजदठाणे ण होइ कम्मइयं।
वेगुव्वियमिस्सो वि य तेसिं पुणु सासणे छेदो ॥33॥

भवनत्रिकल्पस्त्रीणां असंयतस्थाने न भवति कार्मणं।
वैक्रियिकमिश्रमपि च तयोः पुनः सासादने व्युच्छेदः ॥

---

1. आहारकयुगलमौदारिकयुगलं च।
2. देवानां स्त्रीवेदो नास्ति देवीनां च पुंवेदो नास्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ - भवनत्रिक तथा कल्पवासी स्त्रियों के असंयत गुणस्थान में कार्मण काययोग तथा वैक्रियिकमिश्र काययोग नहीं होता है क्योंकि द्वितीय सासादन गुणस्थान में ही उनकी व्युच्छित्ति हो जाती है।

एवं उवरिं णवपणअणुदिसणुत्तरविमाणजादा जे।
ते देवा पुणु सम्मा अविरदठाणुव्व णायव्वा ॥34॥

एवं उपरि नवपंचानुद्दिशानुत्तरविमान जाता ये।
ते देवाः पुनः सम्यक्त्वा अविरतस्थानवज्ज्ञातव्याः ॥

अर्थ - ऊपर नव अनुदिश और पाँच अनुत्तर विमानवासी देवों में जो देव होते हैं। उनके आस्रव देवगति में चतुर्थ गुणस्थान के आस्रव के समान जानना चाहिए क्योंकि वहाँ चतुर्थ गुणस्थान मात्र ही पाया जाता है।

संदृष्टि नं. 10

भवनत्रिक एवं कल्पवासीस्त्री आस्रव 52

भवनत्रिक एवं कल्पवासी स्त्रियों के 52 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मणकाययोग), कषाय 24 (कषाय 16, नोकषाय 8 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	52 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 – वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मणकाययोग), कषाय 24 (कषाय 16, नोकषाय 8 – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद]	0

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
2.सासादन	6 [अनंतानुबंधी 4 कषाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग]	47 [उपर्युक्त 52 - 5 मिथ्यात्व]	5 [5 मिथ्यात्व]
3. मिश्र	0	41 [उपर्युक्त 47-6 (4 अनंतानुबंधी, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग)]	11 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र, और कार्मणकाययोग]
4. अविरत	6 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, वैक्रियिककाययोग, त्रस अविरति]	41 [मिथ्यात्व गुणस्थान के 52-11 (5 मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी 4, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग)]	11 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग]

संदृष्टि नं. 11

सौधर्मादि से ग्रैवेयक पर्यन्त आस्रव 51

सौधर्मादि से ग्रैवेयक पर्यन्त 51 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद) । गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	51 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7- हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद)]	0
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	46 [उपर्युक्त 51-5 मिथ्यात्व]	5 [5 मिथ्यात्व]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
3. मिश्र	0	40 [उपर्युक्त 46-6 (4 अनंतानुबंधी, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग)]	11 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग]
4. अविरत	8 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, वैक्रियिककाययोग, त्रस अविरति, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग]	42 [12 अविरति, 11 योग (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - वैक्रियिकद्विक, कार्मण), अप्रत्याख्यानादि 12 कषाय, हास्यादि 6 नोकषाय, पुंवेद)]	9 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी]

संदृष्टि नं. 12

नव अनुदिश और पाँच अनुत्तर आस्रव 42

नव अनुदिश और पाँच अनुत्तरों में 42 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र, और कार्मणकाययोग), कषाय 19 (अप्रत्याख्यान आदि कषाय 12, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद)। गुणस्थान एक मात्र अविरत होता है।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
4. अविरत	0	42 [12 अविरति, योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 19 (अप्रत्याख्यान आदि कषाय 12, नोकषाय 7- हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद]	0

इति गतिमार्गणा समाप्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुंवेदित्थिविगुव्वियहारदुमणरसणचदुहि एयक्खे।
मणचदुवयणचदुहि य रहिदा अडतीस ते भणिदा ॥35॥

पुंवेदस्त्रीवैक्रियिकाहारकद्विकमनोरसनाचतुर्भि[1]: एकाक्षे।
मनचतुर्वचनतुर्मिश्च रहिता अष्टात्रिंशत्ते भणिता: ॥

अर्थ - एकेन्द्रिय जीवों में पुंवेद, स्त्रीवेद, वैक्रियिकद्विक, आहारकद्विक, मन, रसना इन्द्रिय, घ्राण इन्द्रिय, चक्षु इन्द्रिय और श्रोत्र इन्द्रिय अविरति, चार मनोयोग तथा चार वचनयोग इन उन्नीस आस्रवों के बिना शेष अड़तीस आस्रव कहे गये हैं।

एयक्खे जे उत्ता ते कमसो अंतभासरसणेहिं।
घाणेण य चक्खूहिं य जुत्ता वियलिंदिए णेया ॥36॥

एकाक्षे ये उक्तास्ते क्रमश: अन्तभाषा[2]रसनाभ्यां।
घ्राणेन च चक्षुर्भ्यां च युक्ता विकलेन्द्रिये[3] ज्ञातव्या: ॥

अर्थ - द्वीन्द्रियों में रसनेन्द्रिय अविरति व अनुभय वचनयोग को उपर्युक्त एकेन्द्रिय जीवों के अड़तीस आस्रवों में मिलाने से चालीस आस्रव होते हैं। त्रीन्द्रिय जीवों में घ्राणेन्द्रिय संबंधी अविरति मिलाने से इक्तालीस आस्रव तथा चतुरिन्द्रिय जीवों में चक्षुरिन्द्रिय की अविरति मिलाने पर ब्यालीस आस्रव होते है।

इगविगलिंदियजणिदे सासणठाणे ण होइ ओरालं।
इणमणुभयं च वयणं तेसिं मिच्छेव वोच्छेदो ॥37॥

---

1. मनोरसनाघ्राणचक्षु: श्रोत्राविरतिभ:। 2. अनुभयभाषा। 3. द्वीन्द्रिये अनुभयवचनरसनेन्द्रियाभ्यां युक्ता:, त्रीन्द्रिये ताभ्यां सह घ्राणेन सहिता: चतुरिन्द्रिये तै: सह चक्षुरिन्द्रियेण युक्ता:।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकविकलेन्द्रियजाते सासादनस्थाने न भवति औदारिकं।
एषामनुभयं च वचनं तयोः मिथ्यात्वे एव व्युच्छेदः॥

अर्थ - एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवों के सासादन गुणस्थान में औदारिक काययोग और अनुभय वचनयोग नहीं होता है क्योंकि इन दोनों की मिथ्यात्व गुणस्थान में व्युच्छित्ति हो जाती है। यहाँ पर जो मिथ्यात्व गुणस्थान में अनुभय वचनयोग की व्युच्छित्ति कही गई है, वह विकलेन्द्रियों के ही समझना चाहिए। क्योंकि एकेन्द्रिय जीवों के वचनयोग नहीं होता है।

संदृष्टि नं. 13

एकन्द्रिय आस्रव 38

एकन्द्रिय के 38 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 7 अविरति (षट्काय एवं स्पर्शन इन्द्रिय), योग 3 (औदारिक, औदारिक मिश्र और कार्मण काययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि दो होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	6 [5 मिथ्यात्व, औदारिककाययोग]	38 [5 मिथ्यात्व, 7 अविरति (षट्काय एवं स्पर्शन इन्द्रिय), योग 3 (औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)]	0
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	32 [उपर्युक्त 38-6 (5 मिथ्यात्व, औदारिककाययोग)]	6 [5 मिथ्यात्व, औदारिककाययोग]

संदृष्टि नं. 14

द्वीन्द्रिय आस्रव 40

द्वीन्द्रिय के 40 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 8 अविरति (षट्काय एवं स्पर्शन, रसना इन्द्रिय), योग 4 (अनुभय वचन, औदारिक, औदारिक मिश्र, और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 -

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद) । गुणस्थान मिथ्यात्व आदि दो होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	7 [5 मिथ्यात्व, अनुभय वचनयोग, औदारिककाययोग]	40 [5 मिथ्यात्व, 8 अविरति (षट्काय एवं स्पर्शन, रसना इन्द्रिय), योग 4 (अनुभय वचन, औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद]	0
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	33 [उपर्युक्त 40–7 (5 मिथ्यात्व, अनुभय वचनयोग, औदारिककाययोग)]	7 [5 मिथ्यात्व, अनुभय वचनयोग, औदारिककाययोग]

संदृष्टि नं. 15

त्रीन्द्रिय आस्रव 41

त्रीन्द्रिय के 41 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 9 अविरति (षट्काय एवं स्पर्शन, रसना, घ्राण इन्द्रिय), योग 4 (अनुभयवचन, औदारिक, औदारिक मिश्र, और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद) । गुणस्थान मिथ्यात्व आदि दो होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	7 [5 मिथ्यात्व, अनुभय वचनयोग, औदारिककाययोग]	41 [5 मिथ्यात्व, 9 अविरति (षट्काय एवं स्पर्शन, रसना, घ्राण इन्द्रिय), योग 4 (अनुभय वचन, औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद]	0

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	34 [उपर्युक्त 41-7 (5 मिथ्यात्व, अनुभय वचनयोग, औदारिककाययोग)]	7 [5 मिथ्यात्व, अनुभय वचनयोग, औदारिककाययोग]

संदृष्टि नं. 16

चतुरिन्द्रिय आस्रव 42

चतुरिन्द्रिय के 42 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 10 अविरति (षट्काय एवं स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु इन्द्रिय), योग 4 (अनुभय वचन, औदारिक, औदारिक मिश्र, और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि दो होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	7 [5 मिथ्यात्व, अनुभय वचनयोग, औदारिककाययोग]	42 [5 मिथ्यात्व, 10 अविरति (षट्काय एवं स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु इन्द्रिय), योग 4 (अनुभय वचन, औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)]	0
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	35 [उपर्युक्त 42-7 (5 मिथ्यात्व, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग)]	7 [5 मिथ्यात्व, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग]

पंचेदियजीवाणं तसजीवाणं च पच्चया सव्वे।
पुढ़वीआदिसु पंचसु एइंदिय कहिद अडतीसा ॥38॥

पंचेन्द्रियजीवानां त्रसजीवानां च प्रत्ययाः सर्वे।
पृथिव्यादिषु पंचसु एकेन्द्रिये कथिता अष्टात्रिंशत् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ - त्रसों और पंचेन्द्रिय जीवों में सभी आस्रव (प्रत्यय) गुणस्थानवत् जानना चाहिए। पृथ्वी आदि पंच स्थावरों में एकेन्द्रिय जीवों में कथित अड़तीस आस्रव जानना चाहिए।

♦संदृष्टि नं. 17

पंचेन्द्रिय आस्रव 57

पंचेन्द्रिय के 57 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 15 योग, कषाय 25 (कषाय 16, नोकषाय 9)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चौदह होते हैं। इसकी संदृष्टि गुणस्थान के समान जानना चाहिये। (देखें संदृष्टि नं. 1)

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5	55	2
2. सासादन	4	50	7
3. मिश्र	0	43	14
4. अविरत	7	46	11
5. देशविरत	15	37	20
6. प्रमत्तविरत	2	24	33
7. अप्रमत्तविरत	0	22	35
8. अपूर्वकरण	6	22	35
9.अनिवृत्तिकरण भाग 1	1	16	41
भाग 2	1	15	42
भाग 3	1	14	43
भाग 4	1	13	44
भाग 5	1	12	45
भाग 6	1	11	46
10. सूक्ष्यसाम्परायसंयत	1	10	47
11. उपशांतमोह	0	9	48
12. क्षीणमोह	4	9	48
13. सयोगकेवली	7	7	50
14. अयोगकेवली	0	0	57

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

♦संदृष्टि नं. 18

पृथ्वीकाय, जलकाय एवं वनस्पतिकाय 38

पृथ्वीकाय, जलकाय एवं वनस्पतिकाय में 38 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 7 अविरति (षट्काय एवं स्पर्शन इन्द्रिय), योग 3 (औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्माणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद) । गुणस्थान मिथ्यात्व आदि दो होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	6 [5 मिथ्यात्व, औदारिकमिश्र काययोग]	38 [5 मिथ्यात्व, 7 अविरति (षट्काय एवंस्पर्शन इन्द्रिय), योग 3 (औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद)]	0
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	32 [उपर्युक्त 38-6 (5 मिथ्यात्व, औदारिकमिश्र)]	6 [5 मिथ्यात्व, औदारिकमिश्र]

♦संदृष्टि नं. 19

अग्निकाय एवं वायुकाय 38

अग्निकाय एवं वायुकाय में 38 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 7 अविरति (षट्काय एवं स्पर्शन इन्द्रिय), योग 3 (औदारिक, औदारिक मिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 - हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद) गुणस्थान मात्र एक मिथ्यात्व ही होता है।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	7 [5 मिथ्यात्व, औदारिकमिश्र, कार्मणकाययोग]	38 [उपर्युक्त]	0

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

♦संदृष्टि नं. 20

त्रसकाय आस्रव 57

त्रसकाय के 57 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 15 योग, कषाय 25 (कषाय 16, नोकषाय 9)। गुणस्थान प्रथम से लेकर चौदह होते हैं। इसकी संदृष्टि गुणस्थान के समान जानना चाहिये। (देखें संदृष्टि नं. 1)

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5	55	2
2. सासादन	4	50	7
3. मिश्र	0	43	14
4. अविरत	7	46	11
5. देशविरत	15	37	20
6. प्रमत्तविरत	2	24	33
7. अप्रमत्तविरत	0	22	35
8. अपूर्वकरण	6	22	35
9.अनिवृत्तिकरण भाग 1	1	16	41
भाग 2	1	15	42
भाग 3	1	14	43
भाग 4	1	13	44
भाग 5	1	12	45
भाग 6	1	11	46
10. सूक्ष्यसाम्परायसंयत	1	10	47
11. उपशांतमोह	0	9	48
12. क्षीणमोह	4	9	48
13. सयोगकेवली	7	7	50
14. अयोगकेवली	0	0	57

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हारदुगं वज्जित्ता जोगाणं तेरसाणमेगेगं।
जोगं पुणु पक्खित्ता तेदाला इदरयोगूणा ॥39॥

आहारद्विकं वर्जयित्वा योगनां त्रयोदशानां एकैकं।
योगं पुनः प्रक्षिप्य त्रिचत्वारिंशत् इतरयोगोनाः ॥

अर्थ - आहारक और आहारकमिश्र काययोग को छोड़कर शेष तेरह योगों में निज एक-एक योग जोड़कर शेष चौदह योगों से रहित (57-14) = 43 बन्ध प्रत्यय होते है, अर्थात् मिथ्यात्व 5, अविरति 12, कषाय 25 और स्वकीय योग = 43)

संदृष्टि नं. 21

असत्योभय मनोवचन योग आस्रव 43

असत्योभय मनोवचन योग में 43 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - मिथ्यात्व 5, अविरति 12, स्वकीय योग 1, कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि बारह होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1.मिथ्यात्व	5 [मिथ्यात्व 5]	43 [मिथ्यात्व 5, अविरति 12, स्वकीय योग 1, कषाय 16, नोकषाय 9]	0
2.सासादन	4 [अनन्तानुबन्धी 4]	38 [उपर्युक्त 43 - 5 मिथ्यात्व]	5 [मिथ्यात्व 5]
3.मिश्र	0	34 [उपर्युक्त 38 - अनन्तानुबन्धी 4]	9 [मिथ्यात्व 5, अनन्तानुबन्धी 4]
4.अविरत	5 [अप्रत्याख्यान 4, त्रसअविरति]	34 [उपर्युक्त]	9 [उपर्युक्त]
5.देशविरत	15 [पृथ्वीकाय आदि 11 अविरति, प्रत्याख्यान 4 कषाय]	29 [उपर्युक्त 34 - 5 (अप्रत्याख्यान 4, त्रसअविरति)]	14 [उपर्युक्त 9 + 5 (अप्रत्याख्यान, क्रोधादि 4, त्रसअविरति)]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
6.प्रमत्त	0	14 [1 स्वकीय योग, संज्वलन कषाय 4, नोकषाय 9]	29 [मिथ्यात्व 5, 12 अविरति, अनन्तानुबन्धीआदि 12]
7.अप्रमत्त संयम	0	14 [उपर्युक्त]	29 [उपर्युक्त]
8. अपूर्वकरण	6 [हास्यादि 6नोकषाय]	14 [उपर्युक्त]	29 [उपर्युक्त]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 1	1 [नपुंसकवेद]	8 [1 स्वकीय योग, संज्वलन 4, स्त्रीवेद, पंवेद, नपुंसकवेद]	35 [उपर्युक्त 29 + हास्यादि 6 नोकषाय]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 2	1 [स्त्रीवेद]	7 [उपर्युक्त 8 –नपुंसकवेद]	36 [उपर्युक्त 35 + नपुंसकवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 3	1 [पुंवेद]	6 [उपर्युक्त 7–स्त्रीवेद]	37 [उपर्युक्त 36 + स्त्रीवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 4	1 [संज्वलन क्रोध]	5 [उपर्युक्त 6 –पुंवेद]	38 [उपर्युक्त 37 + पुंवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 5	1 [संज्वलन मान]	4 [उपर्युक्त 5 –क्रोध]	39 [उपर्युक्त 38 + क्रोध]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 6	1 [संज्वलन माया]	3 [उपर्युक्त 4 –मान]	40 [उपर्युक्त 39 + मान]
10.सूक्ष्म साम्पराय	1 [संज्वलन लोभ]	2 [उपर्युक्त 3 –माया]	41 [उपर्युक्त 40 +माया]
11.उपशांतमोह	0	1 [स्वकीय योग]	42 [उपर्युक्त 41 +लोभ]
12.क्षीणमोह	1 [स्वकीय योग]	1 [स्वकीय योग]	42 [उपर्युक्त]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 22

सत्य अनुभय मन-वचन योग औदारिक काययोग आस्रव 43

सत्य अनुभय मन-वचन एवं औदारिक काययोग में 43 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - मिथ्यात्व 5 ,अविरति 12, स्वकीय योग 1, कषाय 16 , नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि तेरह होते हैं। इसकी बारहवें गुणस्थान तक की व्यवस्था संदृष्टि नं. 21 के समान जानना चाहिये। (दे. संदृष्टि नं. 21)

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5	43	0
2. सासादन	4	38	5
3. मिश्र	0	34	9
4. अविरत	5	34	9
5. देशविरत	15	29	14
6. प्रमत्तसंयम	0	14	29
7. अप्रमत्तसंयम	0	14	29
8. अपूर्वकरण	6	14	29
9. अनिवृत्तिकरण भाग 1	1	8	35
9. भाग 2	1	7	36
9. भाग 3	1	6	37
9. भाग 4	1	5	38
9. भाग 5	1	4	39
9. भाग 6	1	3	40
10. सूक्ष्मसाम्पराय	1	2	41
11. उपशांतमोह	0	1	42
12. क्षीणमोह	0	1 [स्वकीय योग]	42
13. संयोगकेवली	1 [स्वकीय योग]	1 [स्वकीय योग]	42 [उपर्युक्त]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओरालमिस्स साणे संढत्थीणं च वोच्छिदी होदि।
वेगुव्वमिस्स साणे इत्थीवेदस्स वोच्छेदो ॥40॥

औदारिकमिश्रस्य सासादने षंढस्त्रियोश्च व्युच्छित्तिः भवति।
वैक्रियिकमिश्रस्य सासादने स्त्रीवेदस्य व्युच्छेदः॥

अर्थ - औदारिक मिश्रकाययोग में सासादन गुणस्थान में नपुंसकवेद और स्त्रीवेद की व्युच्छित्ति हो जाती है। वैक्रियिकमिश्र काययोग में सासादन गुणस्थान में स्त्रीवेद के आस्रव की व्युच्छित्ति हो जाती है।

तेसिं साणे संढं णत्थि हु सो होइ अविरदे ठाणे।
कम्मइए विदियगुणे इत्थीवेदच्छिदी होइ ॥41॥

तेषां सासादने षंढं नास्ति हु स भवति अविरते स्थाने।
कार्मणे द्वितीयगुणे स्त्रीवेदच्छित्तिः भवति॥

अर्थ - वैक्रियिकमिश्र काययोग में सासादन गुणस्थान में नपुंसकवेद नहीं पाया जाता है। तथा चतुर्थ गुणस्थान में नपुंसकवेद होता है। कार्मण काययोग में द्वितीय गुणस्थान में स्त्रीवेद की व्युच्छित्ति हो जाती है।

संजलणं पुवेयं हस्सादीणोकसायछक्कं च।
णियएक्कजोग्गसहिया बारस आहारगे जुम्मे ॥42॥

संज्वलनं पुवेदं हास्यादिनोकषायषट्कं च।
निजैकयोगसहिता द्वादश आहारके युग्मे॥

अर्थ - आहारक, आहारक मिश्र काययोग में चारों संज्वलन कषाय, पुंवेद, छः हास्यादि नोकषाय एवं स्वकीय एक योग सहित (4 + 7 + 1) बारह आस्रव होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुंवेदे थीसंढं वज्जित्ता सेसपच्चया होंति।
इत्थीवेदे हारदु पुंसंढं च वज्जिदा सव्वे ॥43॥

पुंवेदे स्त्रीषंढाभ्यां वर्जिता शेषप्रत्यया भवन्ति।
स्त्रीवेदं आहारद्विकेन पुंषंढाभ्यां च वर्जिता सर्वे॥

अर्थ - पुंवेद में स्त्रीवेद और नपुंसकवेद को छोड़कर शेष सभी पचपन आस्रव होते हैं। स्त्रीवेद में आहारकद्विक, पुंवेद और नपुंसकवेद को छोड़कर शेष सभी तिरेपन आस्रव (प्रत्यय) होते हैं।

विशेष - कर्मकाण्ड में पुंवेद में सत्तावन, स्त्री तथा नपुंसकवेद में पचपन आस्रव कहे गये हैं, जो कि सही विदित होते हैं। (विशेष देखें कर्मकाण्ड आदिमति माता जी का अनुवाद पृष्ठ 717)

संदृष्टि नं. 23

औदारिकमिश्रकाययोग आस्रव 43

औदारिकमिश्रकाययोग में 43 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - मिथ्यात्व 5, अविरति 12, औदारिकमिश्रकाययोग, कषाय 16 , नोकषाय 9। गुणस्थान 1, 2, 4, 13 ये चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1.मिथ्यात्व	5 [मिथ्यात्व 5].	43 [मिथ्यात्व 5 ,अविरति 12, औदारिकमिश्रकाययोग, कषाय 16 , नोकषाय 9]	0
2.सासादन	6 [अनन्तानुबन्धी 4, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद]	38 [उपर्युक्त 43 – 5 मिथ्यात्व]	5 [मिथ्यात्व 5]
4.अविरत	31 [अप्रत्याख्यानादि 12 कषाय, हास्यादि 6 नोकषाय, पुंवेद, अविरति 12]	32 [उपर्युक्त 38 – 6(अनन्तानुबन्धी 4, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद)]	11 [मिथ्यात्व 5, अनन्तानुबन्धी 4, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद]
13.सयोग केवली	1 [औदारिकमिश्रकाययोग]	1 [औदारिकमिश्रकाययोग]	42 [उपर्युक्त 11 + अविरतगुण स्थान केव्युच्छिन्न 31 आस्रव]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 24

वैक्रियिककाययोग आस्रव 43

वैक्रियिककाययोग में 43 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - मिथ्यात्व 5, अविरति 12, वैक्रियिककाययोग, कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1.मिथ्यात्व	5 [मिथ्यात्व 5]	43 [मिथ्यात्व 5, अविरति 12, वैक्रियिककाययोग, कषाय 16, नोकषाय 9]	0
2.सासादन	4 [अनन्तानुबन्धी 4]	38 [उपर्युक्त 43 – मिथ्यात्व 5]	5 [मिथ्यात्व 5]
3. मिश्र	0	34 [उपर्युक्त 38 –अनन्तानुबन्धी 4]	9 [मिथ्यात्व 5, अनन्तानुबन्धी 4]
4.अविरत	6 [अप्रत्याख्यान 4, वैक्रियिककाययोग, त्रस अविरत]	34 [उपर्युक्त]	9 [उपर्युक्त]

संदृष्टि नं. 25

वैक्रियिकमिश्रकाययोग आस्रव 43

वैक्रियिकमिश्रकाययोग में 43 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - मिथ्यात्व 5, अविरति 12, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, कषाय 16 , नोकषाय 9। गुणस्थान 1, 2, 4 ये तीन होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [मिथ्यात्व 5]	43 [मिथ्यात्व 5, अविरति 12, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, कषाय 16, नोकषाय 9]	0
2. सासादन	5 [अनन्तानुबन्धी 4, स्त्रीवेद]	37 [उपर्युक्त 43 – 6 (नपुंसकवेद, मिथ्यात्व 5)]	6 [मिथ्यात्व 5, नपुंसकवेद]
4.अविरत	6 [अप्रत्याख्यान 4, वैक्रियिककाययोग, त्रस अविरति]	33 [उपर्युक्त 38 - 5 (अनन्तानुबन्धी 4, स्त्रीवेद)]	10 [मिथ्यात्व 5, अनन्तानुबन्धी 4, स्त्रीवेद]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 26

आहारक – आहारकमिश्रकाययोग आस्रव 12

आहारक - आहारकमिश्रकाययोग में 12 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - संज्वलन कषाय 4, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद, स्वकीय योग। गुणस्थान एक मात्र छटवां होता है।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
6.प्रमत्त संयम	0	12 [संज्वलन कषाय 4, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद, स्वकीय योग]	0

संदृष्टि नं. 27

कार्मणकाययोग आस्रव 43

कार्मणकाययोग में 43 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - मिथ्यात्व 5, अविरति 12, कार्मणकाययोग, कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान 1, 2, 4, 13 ये चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1.मिथ्यात्व	5 [मिथ्यात्व 5]	43 [मिथ्यात्व 5, अविरति 12, कार्मणकाययोग, कषाय 16, नोकषाय 9]	0
2.सासादन	5 [अनन्तानुबन्धी 4, स्त्रीवेद]	38 [उपर्युक्त 43 – 5 मिथ्यात्व]	5 [मिथ्यात्व 5]
4.अविरत	32 [अप्रत्याख्यान आदि 12 कषाय, हास्यादि 6 नोकषाय, पुंवेद, नपुंसकवेद, अविरति 12]	33 [उपर्युक्त 38 - 5 (अनन्तानुबन्धी 4, स्त्रीवेद)]	10 [मिथ्यात्व 5, अनन्तानुबन्धी 4, स्त्रीवेद]
13.सयोग केवली	1 [कार्मणकाययोग]	1 [कार्मणकाययोग]	42 [उपर्युक्त 10 + अविरतगुण – स्थान केव्युच्छिन्न 32 आस्रव]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 28

पुंवेद आस्रव 55

पुंवेद में 55 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 15 योग, कषाय 23 (कषाय 16, हास्य आदि 6 नोकषाय एवं पुंवेद) । गुणस्थान मिथ्यात्व आदि 9 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	53 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 13 (मनयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 – औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद]	2 [आहारक, आहारकमिश्र काययोग]
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	48 [12 अविरति, योग 13 (मनयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 – औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण), कषाय 23 (कषाय 16, नोकषाय 7 – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद]	7 [5 मिथ्यात्व, आहारक, आहारकमिश्र काययोग]
3. मिश्र	0	41 [उपर्युक्त 48–7 (4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग)]	14 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग]
4. अविरत	9 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, त्रस अविरति, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]	44 [12 अविरति, योग 13 (मनयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 – औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण), अप्रत्याख्यानादि 12 कषाय, नोकषाय 9 – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद]	11 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, आहारक, आहारकमिश्र काययोग]
5. देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	35 [गुणस्थानवत् 37–2 (स्त्रीवेद, नपुंसकवेद)]	20 [5 मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी आदि 8 कषाय, त्रस अविरति, आहारकद्विक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक, और कार्मणकाययोग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
6.प्रमत्तविरत	2 [गुणस्थानवत्]	22 [गुणस्थानवत् 24-2 (स्त्रीवेद, नपुंसकवेद)]	33 [5 मिथ्यात्व, अविरति 12, अनंतानुबंधी आदि 12 कषाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक, और कार्मण काययोग]
7.अप्रमत्त विरत	0	20 [गुणस्थानवत् 22-2 (स्त्रीवेद, नपुंसकवेद)]	35 [उपर्युक्त 33+2 (आहारकद्विक)]
8.अपूर्वकरण	6 [गुणस्थानवत्]	20 [गुणस्थानवत् 22-2 (स्त्रीवेद, नपुंसकवेद)]	35 [उपर्युक्त]
9.अनिवृत्ति-करण भाग1	0	14 [गुणस्थानवत् 16-2 (स्त्रीवेद, नपुंसकवेद)]	41 [उपर्युक्त 35 + हास्य आदि 6 नोकषाय]
9.अनिवृत्ति-करण भाग2	0	14 [गुणस्थानवत् 15-1 (स्त्रीवेद)]	41 [उपर्युक्त]
9.अनिवृत्ति-करण भाग3	1 [पुंवेद]	14 [गुणस्थानवत्]	41 [उपर्युक्त]

मिस्सदुकम्मइयच्छिदी साणे[1] संढ़े ण होइ पुरसिच्छी।
हारदुगं विदियगुण ओरालियमिस्स वोच्छेदो ॥44॥

मिश्रद्विककार्मणच्छित्तिः सासादने, षंढ़े न भवतः पुरूषस्त्रियौ।
आहारद्विकं द्वितीयगुणे औदारिकमिश्रस्य व्युच्छेदः ॥

अर्थ - स्त्रीवेद में सासादन गुणस्थान में औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग की व्युच्छित्ति हो जाती है। नपुंसकवेद में पुंवेद, स्त्रीवेद एवं आहारकद्विक नहीं पाये जाते हैं तथा नपुंसकवेद में सासादन गुणस्थान में औदारिक मिश्र काययोग की व्युच्छित्ति हो जाती है एवं सासादन गुणस्थान में वैक्रियिक मिश्र को कम कर चतुर्थ गुणस्थान में जोड़ देना चाहिए। क्योंकि नपुंसक वेद में सासादन गुणस्थान में वैक्रियिकमिश्र काययोग नहीं पाया जाता है। (उपर्युक्त अर्थ गाथा 44 एवं गाथा 45 के दो चरणों से ग्रहण किया गया है)

---

1. स्त्रीवेदस्य सासादन गुणस्थाने।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 29

स्त्रीवेद आस्रव 53

स्त्रीवेद में 53 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 13 योग (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण), कषाय 23 (कषाय 16, हास्य आदि 6 नोकषाय एवं स्त्रीवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि 9 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	53 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 13 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण) कषाय 23 (कषाय 16, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद)]	0
2. सासादन	7 [अनंतानुबंधी 4 कषाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग]	48 [उपर्युक्त 53 - 5 मिथ्यात्व]	5 [5 मिथ्यात्व]
3. मिश्र	0	41 [उपर्युक्त 48-7 (4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग)]	12 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग]
4. अविरत	6 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, त्रस अविरति, वैक्रियिक काययोग]	41 [12 अविरति, योग 10 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 2 - औदारिक, वैक्रियिक), अप्रत्याख्यानादि 12 कषाय, हास्यादि 6 नोकषाय, स्त्रीवेद]	12 [उपर्युक्त]
5. देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	35 [गुणस्थानवत् 37-2 (पुंवेद, नपुंसकवेद)]	18 [उपर्युक्त 12 + 6 (अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, त्रस अविरति, वैक्रियिक काययोग)]
6. प्रमत्त विरत	0	20 [गुणस्थानवत् 24-4 (पुंवेद, नपुंसकवेद, आहारकद्विक)]	33 [5 मिथ्यात्व, अविरति 12, अनंतानुबंधी आदि 12 कषाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक और कार्मण काययोग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
7. अप्रमत्त विरत	0	20 [उपर्युक्त]	33 [उपर्युक्त]
8. अपूर्वकरण	6 [गुणस्थानवत्]	20 [उपर्युक्त]	33 [उपर्युक्त]
9.अनिवृत्ति-करण भाग1	0	14 [उपर्युक्त 20–हास्य आदि 6 नोकषाय]	39 [उपर्युक्त 33 + हास्य आदि 6, नोकषाय]
9.अनिवृत्ति-करण भाग2	1 [स्त्रीवेद]	14 [उपर्युक्त]	39 [उपर्युक्त]

संदृष्टि नं. 30

नपुंसकवेद आस्रव 53

नपुंसकवेद के 53 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 13 योग (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 23 (कषाय 16, हास्य आदि 6 नोकषाय एवं नपुंसकवेद)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि 9 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	53 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 13 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 – औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण) कषाय 23 (कषाय 16, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद]	0
2. सासादन	5 [अनंतानुबंधी 4 कषाय, औदारिक मिश्रकाययोग]	47 [उपर्युक्त 53 – 6 (5 मिथ्यात्व, वैक्रियिकमिश्रकाययोग]	6 [5 मिथ्यात्व, वैक्रियिक मिश्रकाययोग]
3. मिश्र	0	41 [उपर्युक्त 47–6 (4 अनंतानुबंधी, वैक्रियिकमिश्र, कार्मणकाययोग)]	12 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
4. अविरत	8 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, त्रस अविरति, वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र, कार्मण काययोग]	43 [उपर्युक्त 41+2 (वैक्रियिकमिश्र, कार्मणकाययोग)]	10 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र काययोग]
5. देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	35 [गुणस्थानवत् 37-2 (पुंवेद, स्त्रीवेद)]	18 [उपर्युक्त 10+8 (अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, त्रस अविरति, वैक्रियिकद्विक, कार्मणकाययोग)]
6. प्रमत्तविरत	0	20 [संज्वलन 4, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद, मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिक काययोग]	33 [5 मिथ्यात्व, अविरति 12, अनंतानुबंधी आदि 12 कषाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक और कार्मणकाययोग]
7. अप्रमत्त विरत	0	20 [उपर्युक्त]	33 [उपर्युक्त]
8. अपूर्वकरण	6 [गुणस्थानवत्]	20 [उपर्युक्त]	33 [उपर्युक्त]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 1	1 [नपुंसकवेद]	14 [उपर्युक्त 20-हास्य आदि 6 नोकषाय]	39 [उपर्युक्त 33 + 6, नोकषाय]

तेसिं अवणिय वेगुव्वियमिस्स अविरदे हु णिक्खेवे।
कोहचउक्के माणादिबारसहीण पणदाला ॥45॥

तेषां अपनीय वैक्रियिकमिश्रं अविरते हि निक्षिपेत्।
क्रोधचतुष्के मानादिद्वादशहीनाः पंचचत्वारिंशत् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणादितिये एवं इदरकसाणहिं विरहिदा जाणे।
कुमदिकुसुदे ण विज्जदि हारदुगं होंति पणवण्णा ॥46॥

मानादित्रिके एवं इतरकषायैः विरहितान् जानीहि।
कुमतिकुश्रुतयोः न विद्यते आहारद्विकं भवन्ति पंचपंचाशत्॥

अर्थ - अनन्तानुबंधी - अप्रत्याख्यानादि चारों प्रकार के क्रोध में अपनी चार कषाय के अतिरिक्त अन्य बारह कषायों को कम करने पर शेष (57-12) = 45 आस्रव होते हैं। इसी प्रकार मानादि त्रय चतुष्क में अपनी चार कषायों के अतिरिक्त अन्य बारह कषायों को कम करने पर शेष पैंतालीस आस्रव जानना चाहिए। कुमति और कुश्रुतज्ञान में आहारकद्विक को छोड़कर शेष पचपन आस्रव होते हैं।

वेभंगे बावण्णा कमणमिस्सदुगहारदुगहीणा।
णाणतिये अडदालं पणमिच्छाचारिअणरहिदा ॥47॥

विभंगे द्विपंचाशत् कार्मणमिश्रद्विकाहारद्विकहीनाः।
ज्ञानत्रिके अष्टचत्वारिंशत् पंचमिथ्यात्वचतुरनरहिताः॥

अर्थ - विभंगावधि ज्ञान में कार्मण काययोग, औदारिकमिश्र काययोग, वैक्रियिकमिश्र काययोग, आहारकद्विक बिना शेष बावन आस्रव होते हैं। मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी व अवधिज्ञानी जीवों के अनन्तानुबंधी चतुष्क और पाँच मिथ्यात्व को छोड़कर अड़तालीस आस्रव होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 31

क्रोध चतुष्क आस्रव 45

अनन्तानुबंधी आदि चारों प्रकार के क्रोधों में 45 आस्रव होते हैं - आस्रव के 57 भेदों में से 4 कषायों की शेष मान आदि 12 कषायें कम करने पर 45 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 15 योग, 4 प्रकार का क्रोध, नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि 9 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	43 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 13 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग), 4 प्रकार का क्रोध, नोकषाय 9]	2 [आहारक और आहारकमिश्र काययोग]
2. सासादन	1 [अनंतानुबंधी क्रोध]	38 [उपर्युक्त 43-5 मिथ्यात्व]	7 [5 मिथ्यात्व, आहारकद्विक]
3. मिश्र	0	34 [उपर्युक्त 38-4 (अनंतानुबंधी क्रोध, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग)]	11 [5 मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी क्रोध, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकद्विक और कार्मण काययोग]
4. अविरत	6 [अप्रत्याख्यान क्रोध, त्रस अविरति, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक, कार्मणकाययोग]	37 [उपर्युक्त 34+3 (औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग)]	8 [5 मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी क्रोध, आहारकद्विक]
5. देशविरत	12 [पृथ्वीकाय आदि 11 अविरति, प्रत्याख्यान क्रोध]	31 [उपर्युक्त 37-6 (अप्रत्याख्यान क्रोध, त्रस अविरति, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक, कार्मण काययोग)]	14 [उपर्युक्त 8 + 6 (अप्रत्याख्यान क्रोध, त्रस अविरति, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक, कार्मण काययोग)]
6. प्रमत्त विरत	2 [आहारकद्विक]	21 [संज्वलन क्रोध, नोकषाय 9, मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिक काययोग, आहारकद्विक]	24 [5 मिथ्यात्व, अविरति 12, अनंतानुबंधी आदि 3 प्रकार का क्रोध, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक और कार्मणकाययोग]
7. अप्रमत्त विरत	0	19 [उपर्युक्त 21 - आहारकद्विक]	26 [उपर्युक्त 24 + आहारकद्विक]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
8. अपूर्वकरण	6 [हास्य आदि 6 नोकषाय]	19 [उपर्युक्त]	26 [उपर्युक्त]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 1	1 [नपुंसकवेद]	13 [उपर्युक्त 19 – हास्य आदि 6 नोकषाय]	32 [उपर्युक्त 26 + हास्य आदि 6 नोकषाय]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 2	1 [स्त्रीवेद]	12 [उपर्युक्त 13 – नपुंसकवेद]	33 [उपर्युक्त 32 + नपुंसकवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 3	1 [पुंवेद]	11 [उपर्युक्त 12–स्त्रीवेद]	34 [उपर्युक्त 33 + स्त्रीवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 4	1 [संज्वलन क्रोध]	10 [उपर्युक्त 11–पुंवेद]	35 [उपर्युक्त 34 + पुंवेद]
नोट – इसी प्रकार चारों प्रकार के मान, माया, लोभ कषाय में संदृष्टि लगाना चाहिए। मात्र विशेषता यह है कि लोभ कषाय में मिथ्यात्व आदि 10 गुणस्थान होते हैं।			

संदृष्टि नं. 32

कुमति कुश्रुतज्ञान आस्रव 55

कुमति कुश्रुतज्ञान में 55 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 13 योग (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग), कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि 2 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	55 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 13 योग (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 – औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग), कषाय 16, नोकषाय 9]	0
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	50 [उपर्युक्त 55 – 5 मिथ्यात्व]	5 [5 मिथ्यात्व]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 33

कुअवधिज्ञान आस्रव 52

कुअवधिज्ञान में 52 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 10 योग (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 2 - औदारिक और वैक्रियिक), कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि 2 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	52 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 10 योग (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 2 – औदारिक और वैक्रियिक), कषाय 16, नोकषाय 9]	0
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	47 [उपर्युक्त 52 – 5 मिथ्यात्व]	5 [5 मिथ्यात्व]

संदृष्टि नं. 34

सज्ज्ञानत्रय आस्रव 48

सज्ज्ञानत्रय में 48 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - अविरति 12, योग 15, अप्रत्याख्यान आदि 12 कषाय, नोकषाय 9। गुणस्थान अविरत आदि 9 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
4. अविरत	9 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, त्रस अविरति, औदारिक मिश्र, वैक्रियिकद्विक और कार्मणकाययोग]	46 [अविरति 12, योग 13, (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 – औदारिकद्विक, वैक्रियिकद्विक और कार्मण), अप्रत्याख्यान आदि 12 कषाय, नोकषाय 9]	2 [आहारक, आहारकमिश्र काययोग]
5. देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	37 [गुणस्थानवत्]	11 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, त्रस अविरति, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
			आहारकद्विक और कार्मणकाययोग]
6. प्रमत्त विरत	2 [गुणस्थानवत्]	24 [गुणस्थानवत्]	24 [अविरति 12, अप्रत्याख्यान आदि 8 कषाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक और कार्मणकाययोग]
7. अप्रमत्त विरत	0	22 [गुणस्थानवत्]	26 [उपर्युक्त 24 + 2 (आहारकद्विक)]
8. अपूर्वकरण	6 [गुणस्थानवत्]	22 [गुणस्थानवत्]	26 [उपर्युक्त]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 1	1 [नपुंसकवेद]	16 [गुणस्थानवत्]	32 [उपर्युक्त 26 + हास्य आदि 6 नोकषाय]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 2	1 [स्त्रीवेद]	15 [गुणस्थानवत्]	33 [उपर्युक्त 32 + नपुंसकवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 3	1 [पुंवेद]	14 [गुणस्थानवत्]	34 [उपर्युक्त 33 + स्त्रीवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 4	1 [संज्वलन क्रोध]	13 [गुणस्थानवत्]	35 [उपर्युक्त 34 + पुंवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 5	1 [संज्वलनमान]	12 [गुणस्थानवत्]	36 [उपर्युक्त 35 + संज्वलन क्रोध]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 6	1 [संज्वलन माया]	11 [गुणस्थानवत्]	37 [उपर्युक्त 36 + संज्वलन मान]
10. सूक्ष्म साम्पराय संयत	1 [संज्वलन लोभ]	10 [गुणस्थानवत्]	38 [उपर्युक्त 37 + संज्वलन माया]
11. उपशांत मोह	0	9 [गुणस्थानवत्]	39 [उपर्युक्त 38 + संज्वलन लोभ]
12. क्षीण मोह	4 [गुणस्थानवत्]	9 [गुणस्थानवत्]	39 [उपर्युक्त 38 + संज्वलन लोभ]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणपज्जे संढित्थीवज्जिदसगणोकसाय संजलणं।
आदिमणवजोगजुदा पच्चयवीसं मुणेयव्वा ॥48॥

मन:पर्यये षंढ़स्त्रीवर्जितसप्तनोकषाया: संज्वलना:।
आद्धिमनवयोगयुक्ता: प्रत्ययविंशति: ज्ञातव्या॥

अर्थ - मन:पर्यय ज्ञान में स्त्रीवेद, नपुंसकवेद को छोड़कर शेष सात नोकषाय, संज्वलन चतुष्क, औदारिक काययोग, मनोयोग चार और वचनयोग चार ये बीस आस्रव होते हैं।

ओरालं तंमिस्सं कम्मइयं सच्चअणुभयाणं च।
मणवयणाण चउक्के केवलणाणे सगं जाणे ॥49॥

औदारिकं तन्मिश्रं कार्मणं सत्यानुभयानां च।
मनोवचनानां चतुष्कं केवलज्ञाने सप्त जानीहि॥

अर्थ - केवलीज्ञान में सत्य, अनुभय मनोयोग तथा वचनयोग औदारिक, औदारिकमिश्र काययोग व कार्मण काययोग ये सात आस्रव होते हैं।

संदृष्टि नं. 35

मन:पर्ययज्ञान आस्रव 20

मन:पर्ययज्ञान में 20 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - मनोयोग 4, वचनयोग-4, औदारिक काययोग, संज्वलन क्रोध आदि 4 कषाय, हास्य आदि 6, नोकषाय और पुंवेद। गुणस्थान प्रमत्तसंयत आदि 7 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
6.प्रमत्तविरत	0	20 [उपर्युक्त]	0
7.अप्रमत्त विरत	0	20 [उपर्युक्त]	0

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
8. अपूर्वकरण	6 [गुणस्थानवत्]	20 [उपर्युक्त]	0
9.अनिवृत्ति-करण भाग1	0	14 [उपर्युक्त 20 – हास्य आदि 6 नोकषाय]	6 [हास्य आदि 6 नोकषाय]
9.अनिवृत्ति-करण भाग2	0	14 [उपर्युक्त]	6 [उपर्युक्त]
9.अनिवृत्ति-करण भाग3	1 [पुंवेद]	14 [उपर्युक्त]	6 [उपर्युक्त]
9.अनिवृत्ति-करण भाग4	1 [संज्वलन क्रोध]	13 [गुणस्थानवत्]	7 [उपर्युक्त 6 + पुंवेद]
9.अनिवृत्ति-करण भाग5	1 [संज्वलनमान]	12 [गुणस्थानवत्]	8 [उपर्युक्त 7 + संज्वलन क्रोध]
9.अनिवृत्ति-करण भाग6	1 [संज्वलन माया]	11 [गुणस्थानवत्]	9 [उपर्युक्त 8 + संज्वलन मान]
10. सूक्ष्य साम्परय संयत	1 [संज्वलन लोभ]	10 [गुणस्थानवत्]	10 [उपर्युक्त 9 + संज्वलन माया]
11. उपशांत मोह	0	9 [गुणस्थानवत्]	11 [उपर्युक्त 10 + संज्वलन लोभ]
12. क्षीण मोह	4 [गुणस्थानवत्]	9 [गुणस्थानवत्]	11 [उपर्युक्त]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 36

केवलज्ञान आस्रव 7

केवलज्ञान में 7 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - सत्य, अनुभय मनोयोग, सत्य, अनुभय वचनयोग, औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग गुणस्थान। सयोग केवली और अयोग केवली ये दो होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
13. सयोग केवली	7 [सत्य, अनुभय मनोयोग, सत्य, अनुभय वचनयोग, औदारिकद्विक और कार्मणकाययोग]	7 [सत्य, अनुभय मनोयोग, सत्य, अनुभय वचनयोग, औदारिकद्विक और कार्मणकाययोग]	0
14. अयोग केवली	0	0	7 [उपर्युक्त]

अडमणवयणोरालं हारदुगं णोकसाय संजलणं।
सामाइयछेदेसु य चउवीसा पच्चया होंति ॥50॥

अष्टमनोवचनौदारिका आहारद्विकं नोकषायाः संज्वलनाः।
सामायिकच्छेदयोश्च चतुर्विंशतिः प्रत्यया भवन्ति ॥

अर्थ - सामायिक, छेदोपस्थापना संयम में चार संज्वलन कषाय, नौ नोकषाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग, आहारक काययोग, आहारकमिश्र काययोग इस प्रकार चौबीस आस्रव होते हैं।

विंसदि परिहारे संढित्थीहारदुगवज्जिया एदे।
सुहुमे णवआदिमजोगा संजलणलोहजुदा ॥51॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विंशतिः परिहारे षंढस्त्री-आहारद्धिकवर्जिता एते।
सूक्ष्मे नवादिमयोगा संज्वलननलोभयुताः ॥

अर्थ - परिहारविशुद्धि संयम में ऊपर कथित चौबीस प्रत्ययों में से स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, आहारकद्विक को छोड़कर बीस आस्रव होते हैं। सूक्ष्मसांपराय संयम में आदि के नौ योग अर्थात् चार मनोयोग, चार वचनयोग, औदारिक काययोग एवं संज्वलन लोभ इस प्रकार ये दस आस्रव होते हैं।

एदे पुण जहखादे कम्मणओरालमिस्ससुजुत्ता।
संजलणलोहहीणा एगादसपच्चया णेया ॥52॥

एते पुनः यथाख्याते कार्मणौदारिकमिश्रसंयुक्ताः।
संज्वलनलोभहीना एकादशप्रत्यया ज्ञेयाः ॥

अर्थ - यथाख्यात संयम में ऊपर कथित सूक्ष्मसांपरायसंयम के दस आस्रवों में कार्मणकाययोग, औदारिकमिश्र काययोग जोड़ने पर एवं संज्वलन लोभ कम करने पर ग्यारह आस्रव जानना चाहिए।

तसऽसंजमवज्जिता सेसऽजमा णोकसाय देसजमे।
अट्ठंतिल्लकसाया आदिमणवजोग सगतीसा ॥53॥

त्रसासंयमवर्जिताः शेषायमा नोकषाया देशयमे।
अष्टौ अन्तिमकषाया आदिमनवयोगाः सप्तत्रिंशत् ॥

अर्थ - देशसंयम में त्रस अविरति को छोड़कर शेष ग्यारह अविरति, नौ नोकषाय, प्रत्याख्यान चतुष्क, संज्वलन चतुष्क, चार मनोयोग, चार वचनयोग इस प्रकार समस्त सेंतीस आस्रव होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहारयदुगरहिया पणवण्ण असंजमे दु चक्खुदुगे।
सव्वे णाणतिकहिदा अडदाला ओहिदंसणे णेया ॥54॥

आहारकद्विकरहिता: पंचपंचाशदसंयमे तु, चक्षुर्द्विके।
सर्वे, ज्ञानत्रिककथिता अष्टचत्वारिंशत् अवधिदर्शने ज्ञेया:॥

अर्थ - असंयम आहारद्विक से रहित पचपन आस्रव होते हैं। अचक्षु, चक्षुदर्शन में सभी 57 आस्रव होते है। अवधिदर्शन में मति, श्रुत, अवधि ज्ञान में कथित अड़तालीस आस्रव जानना चाहिये।

संदृष्टि नं. 37

सामायिक-छेदोपस्थापनासंयम आस्रव 24

सामायिक-छेदोपस्थापनासंयम में 24 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - योग 11 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 3 - औदारिक, आहारक, आहारकमिश्र काययोग), संज्वलन क्रोध आदि 4 कषाय, हास्य आदि 6 नोकषाय, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद। गुणस्थान प्रमत्तसंयत आदि 3 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
6. प्रमत्त विरत	2 [गुणस्थानवत्]	24 [गुणस्थानवत्]	0
7. अप्रमत्त विरत	0	22 [उपर्युक्त 24 - आहारकद्विक]	2 [आहारकद्विक]
8. अपूर्वकरण	6 [गुणस्थानवत्]	22 [उपर्युक्त]	2 [आहारकद्विक]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 1	1 [गुणस्थानवत्]	16 [गुणस्थानवत्]	8 [हास्य आदि 6 नोकषाय, आहारकद्विक]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
9.अनिवृत्ति -करण भाग2	1 [गुणस्थानवत्]	15 [गुणस्थानवत्]	9 [उपर्युक्त 8 + नपुंसकवेद]
9.अनिवृत्ति-करण भाग3	1 [गुणस्थानवत्]	14 [गुणस्थानवत्]	10 [उपर्युक्त 9 + स्त्रीवेद]
9.अनिवृत्ति-करण भाग4	1 [गुणस्थानवत्]	13 [गुणस्थानवत्]	11 [उपर्युक्त 10 + पुंवेद]
9.अनिवृत्ति-करण भाग5	1 [गुणस्थानवत्]	12 [गुणस्थानवत्]	12 [उपर्युक्त 11 + संज्वलन क्रोध]
9.अनिवृत्ति-करण भाग6	1 [गुणस्थानवत्]	11 [गुणस्थानवत्]	13 [उपर्युक्त 12 + संज्वलन मान]

संदृष्टि नं. 38

परिहारविशुद्धि संयम आस्रव 20

परिहारविशुद्धि संयम में 20 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - योग 9 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिककाययोग), संज्वलन क्रोध आदि 4 कषाय, हास्य आदि 6 नोकषाय, पुंवेद। गुणस्थान प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत ये दो होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
6.प्रमत्त विरत	0	20 [मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिककाययोग, संज्वलन क्रोध आदि 4 कषाय, हास्य आदि 6 नोकषाय, पुंवेद]	0
7. अप्रमत्त विरत	0	20 [उपर्युक्त]	0

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 39

सूक्ष्यसांपराय संयम आस्रव 10

सूक्ष्यसांपराय संयम में 10 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - योग 9 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिककाययोग), संज्वलन लोभ । गुणस्थान एक मात्र सूक्ष्मसांपराय संयम होता है।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
10. सूक्ष्य साम्पराय संयत	0	10 [मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिककाययोग, संज्वलन लोभ]	0

संदृष्टि नं. 40

यथाख्यात संयम आस्रव 11

यथाख्यात संयम में 11 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - योग 11 - मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग । गुणस्थान उपशांत मोह आदि चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
11. उपशांत मोह	0	9 [मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिककाययोग]	2 [औदारिक मिश्र और कार्मण काययोग]
12. क्षीणमोह	4 [गुणस्थानवत्]	9 [गुणस्थानवत्]	2 [उपर्युक्त]
13. सयोग केवली	7 [गुणस्थानवत्]	7 [गुणस्थानवत्]	4 [असत्य, उभय मनोयोग, असत्य, उभय वचनयोग]
14. अयोग केवली	0	0	11 [उपर्युक्त 4 + सत्य, अनुभय मनोयोग, सत्य, अनुभय वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिक मिश्र और कार्मणकाययोग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 41

देशसंयम आस्रव 37

देशसंयम में 37 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - पृथ्विकाय आदि 11 अविरति, प्रत्याख्यानादि 8 कषाय, हास्यादि 9 नोकषाय, योग 9 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिककाययोग)। गुणस्थान एक मात्र देशसंयम होता है।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
5. देशविरत	0	37 [पृथ्विकाय आदि 11 अविरति, प्रत्याख्यानादि 8 कषाय, हास्यादि 9 नोकषाय, मनोयोग 4, वचनयोग 4, औदारिककाययोग]	0

संदृष्टि नं. 42

असंयम आस्रव 55

असंयम में 55 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 13 योग (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र और कार्मण), कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि 4 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	55 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 13 योग (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिकद्विक, वैक्रियिकद्विक और कार्मण काययोग), कषाय 16, नोकषाय 9]	0
2. सासादन	4 [अनंतानुबंधी 4 कषाय]	50 [उपर्युक्त 55 - 5 मिथ्यात्व]	5 [5 मिथ्यात्व]
3. मिश्र	0	43 [उपर्युक्त 50 - 7 (4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग)]	12 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
4. अविरत	9 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, त्रस अविरति औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक और कार्मण काययोग]	46 [उपर्युक्त 43 + 3 (औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग)]	9 [5 मिथ्यात्व, 4 अनंतानुबंधी]

संदृष्टि नं. 43

चक्षु-अचक्षु दर्शन आस्रव 57

चक्षु-अचक्षु दर्शन में 57 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 15 योग, कषाय 25 (कषाय 16, नोकषाय 9)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि बारह होते हैं। इसकी संदृष्टि गुणस्थान के समान जानना चाहिये। (देखें संदृष्टि नं. 1)

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5	55	2
2. सासादन	4	50	7
3. मिश्र	0	43	14
4. अविरत	9 [असंयम केअविरत गुणस्थानवत्]	46	11
5. देशविरत	15	37	20
6. प्रमत्तविरत	2	24	33
7. अप्रमत्तविरत	0	22	35
8. अपूर्वकरण	6	22	35
9. अनिवृत्तिकरण भाग 1	1	16	41
भाग 2	1	15	42
भाग 3	1	14	43
भाग 4	1	13	44
भाग 5	1	12	45
भाग 6	1	11	46
10. सूक्ष्मसाम्परायसंयत	1	10	47
11. उपशांतमोह	0	9	48
12. क्षीणमोह	4	9	48

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

♦संदृष्टि नं. 44

अवधि दर्शन आस्रव 48

अवधि दर्शन में 48 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - अविरति 12, योग 15, अप्रत्याख्यान आदि 12 कषाय, नोकषाय 9 । गुणस्थान अविरत आदि 9 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
4. अविरत	9 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, त्रस अविरति, औदारिक मिश्र, वैक्रियिकद्विक और कार्मणकाययोग]	46 [अविरति 12, योग 13 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 – औदारिकद्विक, वैक्रियिकद्विक और कार्मण), अप्रत्याख्यान आदि 12 कषाय, नोकषाय 9]	2 [आहारक, आहारकमिश्र काययोग]
5. देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	37 [गुणस्थानवत्]	11 [अप्रत्याख्यान क्रोध आदि 4, त्रस अविरति, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक, आहारकद्विक और कार्मणकाययोग]
6. प्रमत्तविरत	2 [गुणस्थानवत्]	24 [गुणस्थानवत्]	24 [अविरति 12, अप्रत्याख्यान आदि 8 कषाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक और कार्मणकाययोग]
7. अप्रमत्त विरत	0	22 [गुणस्थानवत्]	26 [उपर्युक्त 24+2 (आहारकद्विक)]
8. अपूर्वकरण	6 [गुणस्थानवत्]	22 [गुणस्थानवत्]	26 [उपर्युक्त]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 1	1 [नपुंसकवेद]	16 [गुणस्थानवत्]	32 [उपर्युक्त 26 + हास्य आदि 6 नोकषाय]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 2	1 [स्त्रीवेद]	15 [गुणस्थानवत्]	33 [उपर्युक्त 32 + नपुंसकवेद]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 3	1 [पुंवेद]	14 [गुणस्थानवत्]	34 [उपर्युक्त 33 + स्त्रीवेद]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
9.अनिवृत्ति-करण भाग4	1 [संज्वलन क्रोध]	13 [गुण स्थानवत्]	35 [उपर्युक्त 34 + पुंवेद]
9.अनिवृत्ति-करण भाग5	1 [संज्वलनमान]	12 [गुणस्थानवत्]	36 [उपर्युक्त 35 + संज्वलन क्रोध]
9.अनिवृत्ति-करण भाग6	1 [संज्वलन माया]	11 [गुणस्थानवत्]	37 [उपर्युक्त 36 + संज्वलन मान]
10. सूक्ष्य साम्पराय संयत	1 [संज्वलन लोभ]	10 [गुणस्थानवत्]	38 [उपर्युक्त 37 + संज्वलन माया]
11. उपशांत मोह	0	9 [गुणस्थानवत्]	39 [उपर्युक्त 38 + संज्वलन लोभ]
12. क्षीण मोह	4 [गुणस्थानवत्]	9 [गुणस्थानवत्]	39 [उपर्युक्त]

सगजोगपच्चया खलु केवलणाणव्व केवलालोए।
किण्हतिए पणवण्णं हारदुगं वज्जिऊण हवे ॥55॥

सप्तयोगप्रत्यया: खलु केवलज्ञानवत् केवलालोके।
कृष्णत्रिके पंचपंचाशत् आहारद्विकं वर्जयित्वा भवेत् ॥

अर्थ - केवलदर्शन में केवलज्ञान के समान सात आस्रव जानना चाहिये। कृष्ण, नील, कपोत इन तीन लेश्याओं में आहारकद्विक को छोड़कर पचपन आस्रव होते हैं।

किण्हदुसाणे वेगुव्वियमिस्सछिदी हवेइ तेउतिए।
मिच्छदुठाणे ओरालियमिस्सो णत्थि अविरदे अत्थि ॥56॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृष्णाद्धिकसासादने वैक्रियिकमिश्रच्छित्तिः भवेत् तेजस्त्रिके।
मिथ्यात्वद्धिस्थाने औदारिकमिश्रं नास्ति अविरतेऽस्ति॥

अर्थ - कृष्ण, नील लेश्या के सासादन गुणस्थान में वैक्रियिकमिश्र की व्युच्छित्ति होती है। पीत, पद्म और शुक्ल लेश्या के मिथ्यात्व, सासादन गुणस्थान में औदारिक मिश्र नहीं है, किन्तु चतुर्थ गुणस्थान में है।

♦संदृष्टि नं. 45

केवलदर्शन आस्रव 7

केवल दर्शन में 7 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - सत्य, अनुभय मनोयोग, सत्य, अनुभय वचनयोग, औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग। गुणस्थान सयोग केवली और अयोग केवली ये दो होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
13. सयोग केवली	7 [सत्य, अनुभय मनोयोग, सत्य, अनुभय वचनयोग, औदारिकद्विक और कार्मणकाययोग]	7 [सत्य, अनुभय मनोयोग, सत्य, अनुभय वचनयोग, औदारिकद्विक और कार्मणकाययोग]	0
14. अयोग केवली	0	0	7 [उपर्युक्त]

संदृष्टि नं. 46

कृष्ण-नीललेश्या आस्रव 55

कृष्ण-नीललेश्या में 55 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 13 (मनयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण), कषाय 16 , नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चार होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1.मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	55 [गुणस्थानवत्]	0
2.सासादन	5 [अनन्तानुबन्धी 4, वैक्रियिकमिश्रकाययोग]	50 [गुणस्थानवत्]	5 [5 मिथ्यात्व]
3. मिश्र	0	43 [गुणस्थानवत्]	2 [5 मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी 4, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक मिश्र और कार्मण काययोग]
4. अविरत	8 [अप्रत्याख्यान 4, त्रस अविरति, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक और कार्मण काययोग]	45 [गुणस्थानवत् 46 - वैक्रियिकमिश्रकाययोग]	10 [5 मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी 4, वैक्रियिकमिश्र काययोग]

संदृष्टि नं. 47

कापोत-लेश्या आस्रव 55

कापोत-लेश्या में 55 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 13 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण), कषाय 16 , नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1.मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	55 [गुणस्थानवत्]	0
2.सासादन	4 [गुणस्थानवत्]	50 [गुणस्थानवत्]	5 [5 मिथ्यात्व]
3. मिश्र	0	43 [गुणस्थानवत्]	12 [कृष्ण-नीललेश्यावत्]
4. अविरत	9 [अप्रत्याख्यान 4, त्रस अविरति, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]	46 [गुणस्थानवत्]	9 [5 मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी 4]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 48

पीत-पद्मलेश्या आस्रव 57

पीत-पद्मलेश्या में 57 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 15 (मनोयोग 4 वचनयोग 4, काययोग 7), कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि सात होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1.मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	54 [गुणस्थानवत् 55 - औदारिकमिश्रकाययोग]	3 [गुणस्थानवत् 2 + औदारिकमिश्र काययोग]
2.सासादन	4 [गुणस्थानवत्]	49 [गुणस्थानवत् 50 - औदारिकमिश्रकाययोग]	8 [गुणस्थानवत् 7 + औदारिकमिश्र काययोग]
3.मिश्र	0	43 [गुणस्थानवत्]	14 [गुणस्थानवत्]
4.अविरत	9 [कापोतलेश्यावत्]	46 [गुणस्थानवत्]	11 [गुणस्थानवत्]
5.देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	37 [गुणस्थानवत्]	20 [गुणस्थानवत्]
6.प्रमत्तसंयम	2 [गुणस्थानवत्]	24 [गुणस्थानवत्]	33 [गुणस्थानवत्]
7.अप्रमत्त संयम	0	22 [गुणस्थानवत्]	35 [गुणस्थानवत्]

सुहलेस्सतिये भव्वे सव्वेऽभव्वे ण होदि हारदुगं।
पणवण्णुवसमसम्मे ते मिच्छोरालमिस्सअणरहिदा ॥57॥

शुभलेश्यात्रिके भव्ये सर्वे अभव्ये न भवात्याहारद्विकं।
पंचपंचाशदुपशमसम्यक्त्वे ते मिथ्यात्वौदारिकमिश्रानरहिताः ॥

अर्थ - शुभ तीन लेश्याओं अर्थात् पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याओं में तथा भव्यों में सभी सत्तावन आस्रव होते हैं। अभव्य जीवों के आहारकद्विक को छोड़कर पचपन आस्रव होते हैं। औपशमिक सम्यग्दर्शन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में ऊपर कहे पचपन आस्रवों में से पाँच मिथ्यात्व, औदारिकमिश्र, अनन्तानुबंधी चतुष्क से रहित पैतालीस आस्रव होते हैं।

♦संदृष्टि नं. 49

शुक्ललेश्या आस्रव 57

शुक्ललेश्या में 57 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 15 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 7), कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि तेरह होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1.मिथ्यात्व	5 [5 मिथ्यात्व]	54 [गुणस्थानवत् 55 - औदारिकमिश्रकाययोग]	3 [गुणस्थानवत् 2 + औदारिकमिश्र काययोग]
2.सासादन	4 [गुणस्थानवत्]	49 [गुणस्थानवत् 50 - औदारिकमिश्रकाययोग]	8 [गुणस्थानवत् 7 + औदारिकमिश्र काययोग]
3.मिश्र	0	43 [गुणस्थानवत्]	14 [गुणस्थानवत्]
4.अविरत	9 [कापोतलेश्यावत्]	46 [गुणस्थानवत्]	11 [गुणस्थानवत्]
5.देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	37 [गुणस्थानवत्]	20 [गुणस्थानवत्]
6.प्रमत्त संयम	2 [गुणस्थानवत्]	24 [गुणस्थानवत्]	33 [गुणस्थानवत्]
7.अप्रमत्त संयम	0	22 [गुणस्थानवत्]	35 [गुणस्थानवत्]
8.अपूर्व-करण	6 [गुणस्थानवत्]	22 [गुणस्थानवत्]	35 [गुणस्थानवत्]
9.अनिवृत्ति-करण भाग1	1 [गुणस्थानवत्]	16 [गुणस्थानवत्]	41 [गुणस्थानवत्]
9. भाग2	1 [गुणस्थानवत्]	15 [गुणस्थानवत्]	42 [गुणस्थानवत्]
9. भाग3	1 [गुणस्थानवत्]	14 [गुणस्थानवत्]	43 [गुणस्थानवत्]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
9. भाग4	1 [गुणस्थानवत्]	13 [गुणस्थानवत्]	44 [गुणस्थानवत्]
9. भाग5	1 [गुणस्थानवत्]	12 [गुणस्थानवत्]	45 [गुणस्थानवत्]
9. भाग6	1 [गुणस्थानवत्]	11 [गुणस्थानवत्]	46 [गुणस्थानवत्]
10. सूक्ष्य साम्पराय संयत	1 [गुणस्थानवत्]	10 [गुणस्थानवत्]	47 [गुणस्थानवत्]
11. उपशांत मोह	0	9 [गुणस्थानवत्]	48 [गुणस्थानवत्]
12. क्षीणमोह	4 [गुणस्थानवत्]	9 [गुणस्थानवत्]	48 [गुणस्थानवत्]
13. सयोग केवली	7 [गुणस्थानवत्]	7 [गुणस्थानवत्]	50 [गुणस्थानवत्]

♦संदृष्टि नं. 50

भव्य आस्रव 57

भव्य के 57 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 15 योग, कषाय 25 (कषाय 16, नोकषाय 9)। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि चौदह होते हैं। इसकी संदृष्टि गुणस्थान के समान जानना चाहिये। (देखें संदृष्टि नं. 1)

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5	55	2
2. सासादन	4	50	7
3. मिश्र	0	43	14
4. अविरत	7	46	11
5. देशविरत	15	37	20
6. प्रमत्तविरत	2	24	33

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
7. अप्रमत्तविरत	0	22	35
8. अपूर्वकरण	6	22	35
9. अनिवृत्तिकरण भाग 1	1	16	41
भाग 2	1	15	42
भाग 3	1	14	43
भाग 4	1	13	44
भाग 5	1	12	45
भाग 6	1	11	46
10. सूक्ष्मसाम्परायसंयत	1	10	47
11. उपशांतमोह	0	9	48
12. क्षीणमोह	4	9	48
13. सयोगकेवली	7	7	50
14. अयोगकेवली	0	0	57

♦संदृष्टि नं. 51

अभव्यत्व आस्रव 55

अभव्य में 55 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, 13 योग (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिकद्विक, वैक्रियिकद्विक, कार्मणकाययोग), कषाय 25। गुणस्थान एक मात्र ही मिथ्यात्व ही होता है।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	0	55 [उपर्युक्त]	0

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 52

उपशमसम्यक्त्व आस्रव 45

उपशमसम्यक्त्व में 45 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 12 अविरति, योग 12 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 4-औदारिक, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग), अप्रत्याख्यानादि कषाय 12, नोकषाय 9। गुणस्थान अविरत आदि आठ होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
4. अविरत	8 [त्रस अविरति, अप्रत्याख्यान 4, वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र और कार्मण काययोग]	45 [12 अविरति, योग 12 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 4 - औदारिक, वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र और कार्मण काययोग), अप्रत्याख्यानादि कषाय 12, नोकषाय 9]	0
5. देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	37 [गुणस्थानवत्]	8 [त्रस अविरति, अप्रत्याख्यान 4, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]
6. प्रमत्तसंयम	0	22 [गुणस्थानवत् 24 - 2 (आहारक, आहारकमिश्र काययोग)]	23 [12 अविरति, अप्रत्याख्यानादि 8 कषाय, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]
7. अप्रमत्त संयम	0	22 [गुणस्थानवत्]	23 [उपर्युक्त]
8. अपूर्व-करण	6 [गुणस्थानवत्]	22 [गुणस्थानवत्]	23 [उपर्युक्त]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 1	1 [गुणस्थानवत्]	16 [गुणस्थानवत्]	29 [उपर्युक्त 23 + हास्य आदि 6 नोकषाय]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
9. भाग 2	1 [गुणस्थानवत्]	15 [गुणस्थानवत्]	30 [उपर्युक्त 29 + नपुंसकवेद]
9. भाग 3	1 [गुणस्थानवत्]	14 [गुणस्थानवत्]	31 [उपर्युक्त 30 + स्त्रीवेद]
9. भाग 4	1 [गुणस्थानवत्]	13 [गुणस्थानवत्]	32 [उपर्युक्त 31 + पुंवेद]
9. भाग 5	1 [गुणस्थानवत्]	12 [गुणस्थानवत्]	33 [उपर्युक्त 32 + संज्वलन क्रोध]
9. भाग 6	1 [गुणस्थानवत्]	11 [गुणस्थानवत्]	34 [उपर्युक्त 33 + संज्वलन मान]
10. सूक्ष्य साम्पराय संयत	1 [गुणस्थानवत्]	10 [गुणस्थानवत्]	35 [उपर्युक्त 34 + संज्वलन माया]
11. उपशांत मोह	0	9 [गुणस्थानवत्]	36 [उपर्युक्त 35 + संज्वलन लोभ]

एदे वेदगखइए हारदुओरालमिस्ससंजुत्ता।
मिच्छे सासण मिस्से सगगुणठाणव्व णायव्वा ॥58॥

एते वेदकक्षायिकयोः आहारद्विकौदारिकमिश्रसंयुक्ताः।
मिथ्यात्वे सासादने मिश्रे स्वकगुणस्थानवज्ज्ञातव्या॥

अर्थ - वेदक और क्षायिक सम्यग्दर्शन में ऊपर कहे गये पैंतालीस आस्रवों में आहारकद्विक, औदारिकमिश्र काययोग सहित अड़तालीस आस्रव होते हैं। मिथ्यात्व, सासादन और मिश्र में अपने गुणस्थान के समान आस्रव जानना चाहिए। अर्थात् मिथ्यात्व में पचपन, सासादन में पचास एवं मिश्र में तेतालीस आस्रव होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 53

वेदकसम्यक्त्व आस्रव 48

वेदकसम्यक्त्व में 48 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 12 अविरति, योग 15 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 7 - औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कार्मण काययोग), अप्रत्याख्यानादि कषाय 12, नोकषाय 9। गुणस्थान अविरत आदि चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
4. अविरत	9 [त्रस अविरति, अप्रत्याख्यान 4, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]	46 [12 अविरति, योग 13 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 – औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग), अप्रत्याख्यानादि कषाय 12, नोकषाय 9]	2 [आहारक और आहारकमिश्र काययोग]
5. देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	37 [गुणस्थानवत्]	11 [उपर्युक्त 2 + 9 (त्रस अविरति, अप्रत्याख्यान 4, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग)]
6. प्रमत्तसंयम	2 [गुणस्थानवत्]	24 [गुणस्थानवत्]	24 [12 अविरति, अप्रत्याख्यानादि 8 कषाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]
7. अप्रमत्त संयम	0	22 [गुणस्थानवत्]	26 [उपर्युक्त 24 + 2 (आहारक और आहारकमिश्र काययोग)]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

♦संदृष्टि नं. 54

क्षायिकसम्यक्त्व आस्रव 48

क्षायिकसम्यक्त्व में 48 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 12 अविरति, योग 15 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 7-औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कार्मण काययोग), अप्रत्याख्यानादि कषाय 12, नोकषाय 9। गुणस्थान अविरत आदि ग्यारह होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
4. अविरत	7 [गुणस्थानवत्]	46 [गुणस्थानवत्]	2 [आहारक और आहारकमिश्र काययोग]
5. देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	37 [गुणस्थानवत्]	11 [उपर्युक्त 2 + 9 (त्रस अविरति, अप्रत्याख्यान 4, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकद्विक और कार्मण काययोग)]
6. प्रमत्तसंयम	2 [गुणस्थानवत्]	24 [गुणस्थानवत्]	24 [12 अविरति, अप्रत्याख्यानादि 8 कषाय, औदारिकमिश्र वैक्रियिकद्विक और कार्मण काययोग]
7. अप्रमत्त संयम	0	22 [गुणस्थानवत्]	26 [उपर्युक्त 24 + 2 (आहारक और आहारकमिश्र काययोग)]
8. अपूर्व-करण	6 [गुणस्थानवत्]	22 [गुणस्थानवत्]	26 [उपर्युक्त]
9. अनिवृत्ति-करण भाग 1	1 [गुणस्थानवत्]	16 [गुणस्थानवत्]	32 [उपर्युक्त 26 + हास्य आदि 6 नोकषाय]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
9. भाग 2	1 [गुणस्थानवत्]	15 [गुणस्थानवत्]	33 [उपर्युक्त 32 + नपुंसकवेद]
9. भाग 3	1 [गुणस्थानवत्]	14 [गुणस्थानवत्]	34 [उपर्युक्त 33 + स्त्रीवेद]
9. भाग 4	1 [गुणस्थानवत्]	13 [गुणस्थानवत्]	35 [उपर्युक्त 34 + पुंवेद]
9. भाग 5	1 [गुणस्थानवत्]	12 [गुणस्थानवत्]	36 [उपर्युक्त 35 + संज्वलन क्रोध]
9. भाग 6	1 [गुणस्थानवत्]	11 [गुणस्थानवत्]	37 [उपर्युक्त 36 + संज्वलन मान]
10. सूक्ष्म साम्पराय संयत	1 [गुणस्थानवत्]	10 [गुणस्थानवत्]	38 [उपर्युक्त 37 + संज्वलन माया]
11. उपशांत मोह	0	9 [गुणस्थानवत्]	39 [उपर्युक्त 38 + संज्वलन लोभ]
12. क्षीण मोह	4 [गुणस्थानवत्]	9 [गुणस्थानवत्]	39 [उपर्युक्त]
13. सयोग केवली	7 [गुणस्थानवत्]	7 [गुणस्थानवत्]	41 [अविरति 12, अप्रत्याख्यानादि 12 कषाय, नोकषाय 9, आहारकद्विक, वैक्रियिकद्विक, असत्य, उभय मनोयोग, असत्य उभयवचनयोग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
14. अयोग केवली	0	0	48 [उपर्युक्त 41 + 7 (सत्य, अनुभय मनोयोग, सत्य, अनुभयवचनयोग, औदारिकद्विक और कार्मण काययोग]

संदृष्टि नं. 55

मिथ्यात्व आस्रव 55

मिथ्यात्व में 57 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 13 (मनोयोग 4 वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग), कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान एक मात्र मिथ्यात्व होता है।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	0	55 [उपर्युक्त]	0

संदृष्टि नं. 56

सासादन आस्रव 50

सासादन में 50 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 12 अविरति, योग 13 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान एक मात्र सासादन होता है।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
2. सासादन	0	50 [12 अविरति, योग 13 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 5 - औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 16, नोकषाय 9]	0

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 57

मिश्र आस्रव 43

मिश्र में 43 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 12 अविरति, योग 10 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 2 - औदारिक, वैक्रियिक), अप्रत्याख्यानादि कषाय 12, नोकषाय 9। गुणस्थान एक मात्र मिश्र आदि होता है।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
3.मिश्र	0	43 [12 अविरति, योग 10 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 2 – औदारिक, वैक्रियिक), अप्रत्याख्यानादि कषाय 12, नोकषाय 9]	0

सण्णिस्स होंति सयला वेगुव्वाहारदुगमसण्णिस्स।
चदुमणमादितिवयणं अणिंदियं णत्थि पणदाला ॥59॥

संज्ञिनः भवन्ति सकला वैक्रियिककाहरद्विकसंज्ञिनः।
चतुर्मनांसि आदित्रिवचनानि अनिन्द्रिय न संति पंचचत्वारिंशत् ॥

अर्थ - संज्ञी मार्गणा में संज्ञी में सभी सत्तावन आस्रव होते हैं। असंज्ञी में चार मनोयोग, तीन वचनयोग (सत्य, असत्य, उभय), वैक्रियिकद्विक, आहारकद्विक तथा मन अविरति से रहित पैंतालीस आस्रव होते हैं।

संदृष्टि नं. 58

संज्ञी आस्रव 57

संज्ञी में 57 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 15 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 7), कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि बारह होते हैं। इसकी संदृष्टि रचना गुणस्थान के समान जानना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाहिए। (देखें संदृष्टि नं. 1)

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	5	55	2
2. सासादन	4	50	7
3. मिश्र	0	43	14
4. अविरत	9 [अप्रत्याख्यान 4, त्रस अविरति, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोग]	46	11
5. देशविरत	15	37	20
6. प्रमत्तसंयम	2	24	33
7. अप्रमत्तसंयम	0	22	35
8. अपूर्वकरण	6	22	35
9. अनिवृत्तिकरण भाग 1	1	16	41
9. भाग 2	1	15	42
9. भाग 3	1	14	43
9. भाग 4	1	13	44
9. भाग 5	1	12	45
9. भाग 6	1	11	46
10. सूक्ष्मसाम्परायसंयत	1	10	47
11. उपशांतमोह	0	9	48
12. क्षीणमोह	4	9	48

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 59

असंज्ञी आस्रव 45

असंज्ञी में 45 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, मन अविरति बिना 11 अविरति, योग 4 (अनुभयवचनयोग, औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग), कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि दो होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1. मिथ्यात्व	7 [5 मिथ्यात्व, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग]	45 [5 मिथ्यात्व, मन बिना 11 अविरति, योग 4 (अनुभयवचनयोग, औदारिक, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग), कषाय 16, नोकषाय 9]	0
2. सासादन	4 [अनन्तानुबंधी 4]	38 [मन बिना 11 अविरति, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग, कषाय 16, नोकषाय 9]	7 [मिथ्यात्व 5, अनुभयवचनयोग और औदारिक काययोग]

कम्मइयं वज्जित्ता छपण्णासा हवंति आहारे।
तेदाला णाहारे कम्मइयरजोगपरिहीणा ॥60॥[1]

कार्मणं वर्जयित्वा षट्पंचाशद्भवन्त्याहारे।
त्रिचत्वारिंशदनाहारे कार्मणेतरयोगपरिहीनाः ॥

अर्थ - आहारक जीवों में कार्मण काययोग के बिना शेष छप्पन आस्रव तथा अनाहारक जीवों में कार्मण काययोग के बिना शेष चौदह योगों को कम करने पर (57-14) = 43 आस्रव होते हैं। अर्थात् अनाहारक जीवों में कार्मण काययोग का सद्भाव पाया जाता है, किन्तु अन्य योगों का नहीं।

---

1. कार्मणं विहाय इतरैः चतुर्दशयोगैर्हीना इत्यर्थः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 60

आहारक आस्रव 56

आहारक में 56 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 14 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 6 - औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिक मिश्र, आहारक और आहारक मिश्र काययोग), कषाय 16, नोकषाय 9। गुणस्थान मिथ्यात्व आदि 13 होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1.मिथ्यात्व	5 [गुणस्थानवत्]	54 [5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, योग 12 (मनोयोग 4, वचनयोग 4, काययोग 4 – औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक और वैक्रियिकमिश्र काययोग), कषाय 16, नोकषाय 9]	2 [गुणस्थानवत्]
2.सासादन	4 [गुणस्थानवत्]	49 [गुणस्थानवत् 50 - कार्मण काययोग]	7 [गुणस्थानवत्]
3.मिश्र	0	43 [गुणस्थानवत्]	13 [गुणस्थानवत् 14 – कार्मण काययोग]
4.अविरत	7 [गुणस्थानवत्]	45 [गुणस्थानवत् 46 – कार्मण काययोग]	11 [गुणस्थानवत्]
5.देशविरत	15 [गुणस्थानवत्]	37 [गुणस्थानवत्]	19 [गुणस्थानवत् 20 – कार्मण काययोग]
6.प्रमत्त संयम	2 [गुणस्थानवत्]	24 [गुणस्थानवत्]	32 [गुणस्थानवत् 33 – कार्मण काययोग]
7.अप्रमत्त संयम	0	22 [गुणस्थानवत्]	34 [गुणस्थानवत् 35 – कार्मण काययोग]
8.अपूर्व-करण	6 [गुणस्थानवत्]	22 [गुणस्थानवत्]	34 [गुणस्थानवत् 35 – कार्मण काययोग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
9. अनिवृत्ति-करण भाग1	1 [गुणस्थानवत्]	16 [गुणस्थानवत्]	40 [गुणस्थानवत् 41 – कार्मण काययोग]
9. भाग2	1 [गुणस्थानवत्]	15 [गुणस्थानवत्]	41 [गुणस्थानवत् 42 – कार्मण काययोग]
9. भाग3	1 [गुणस्थानवत्]	14 [गुणस्थानवत्]	42 [गुणस्थानवत् 43 – कार्मण काययोग]
9. भाग4	1 [गुणस्थानवत्]	13 [गुणस्थानवत्]	43 [गुणस्थानवत् 44 – कार्मण काययोग]
9. भाग5	1 [गुणस्थानवत्]	12 [गुणस्थानवत्]	44 [गुणस्थानवत् 45 – कार्मण काययोग]
9. भाग6	1 [गुणस्थानवत्]	11 [गुणस्थानवत्]	45 [गुणस्थानवत् 46 – कार्मण काययोग]
10. सूक्ष्म साम्पराय संयत	1 [गुणस्थानवत्]	10 [गुणस्थानवत्]	46 [गुणस्थानवत् 47 – कार्मण काययोग]
11. उपशांत मोह	0	9 [गुणस्थानवत्]	47 [गुणस्थानवत् 48 – कार्मण काययोग]
12. क्षीण मोह	4 [गुणस्थानवत्]	9 [गुणस्थानवत्]	47 [गुणस्थानवत् 48 – कार्मण काययोग]
13. सयोग केवली	6 [गुणस्थानवत्]	6 [गुणस्थानवत्]	50 [गुणस्थानवत् 51 – कार्मण काययोग]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदृष्टि नं. 61

अनाहारक आस्रव 43

अनाहारक में 43 आस्रव होते हैं जो इस प्रकार हैं - 5 मिथ्यात्व, 12 अविरति, कार्मणकाययोग, कषाय 16, नोकषाय 9 । गुणस्थान 1, 2, 4, 13 ये चार होते हैं।

गुणस्थान	आस्रव व्युच्छित्ति	आस्रव	आस्रव अभाव
1.मिथ्यात्व	5 [गुणस्थानवत्]	43 [उपर्युक्त]	0
2.सासादन	5 [अनन्तानुबन्धी 4, स्त्रीवेद]	38 [12 अविरति, कार्मण काययोग, कषाय 16, नोकषाय 9]	5 [मिथ्यात्व 5]
4.अविरत	32 [अप्रत्याख्यानादि 12, कषाय, हास्यादि 6 नोकषाय, पुंवेद, नपुंसकवेद]	33 [उपर्युक्त 38-5 (अनन्तानुबंधी 4, स्त्रीवेद)]	10 [मिथ्यात्व 5, (अनन्तानुबंधी 4, स्त्रीवेद)]
13.सयोग केवली	1 [कार्मणकाययोग]	1 [कार्मणकाययोग]	42 [उपर्युक्त 10 + अविरति गुणस्थान के व्युच्छिन्न 32 आस्रव]

इदि मग्गणासु जोगो पच्चयभेदो मया समासेण।
कहिदो सुदमुणिणा जो भावइ सो जाइ अप्पसुहं ॥61॥

इति मार्गणासु योग्यः प्रत्ययभेदो मया समासेन।
कथितः श्रुतमुनिना यो भावयति स याति आत्मसुखं ॥

अर्थ - इस प्रकार मार्गणाओं में योग आस्रव (प्रत्यय) भेद मुझ श्रुतमुनि के द्वारा संक्षेप से कहे गये। जो उपर्युक्त आस्रवों का भावपूर्वक चिन्तवन करता है, वह आत्म सुख को प्राप्त करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयकमलजुयलविणमियविणे-यजणकयसुपूयमाहप्पो।
णिज्जियमयणपहावो सो वालिंदो चिरं जयऊ॥62॥

पदकमलयुगलविनतविनेयजनकृतसुपूजामाहात्म्यः।
निर्जितमदनप्रभावः स बालेन्द्रः चिरं जयतु॥

अर्थ - जिनके चरण कमल युगल नम्रीभूत शिष्य जनों के द्वारा की गई विशिष्ट पूजा से माहात्म्य को प्राप्त हैं तथा जिन्होंने कामदेव के मद के प्रभाव को जीत लिया है, वे बालचन्द्र मुनि चिरकाल तक जयवंत रहें।

इति मार्गणास्रव-त्रिभंगी।

इति श्री-श्रुतमुनि-विरचितास्रव-त्रिभंगी समाप्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org